बाल सखा

लेख-सूची

* ये सब लेख सचित्र हैं—चित्र-संख्या ३८ ।

लो
प्यारे बालको !

बढ़िया बढ़िया पुस्तकें पढ़ो जो—

ख़ूब हँसावें
ख़ूब खेलावें,
ख़ूब पढ़ावें,
अच्छी बातें सिखलावें,

ये वे ही पुस्तकें हैं जिनके नाम तुम आगे पढ़ोगे

प्यारे बालकों के लिए

गुदगुदी पैदा करने वाली,
ख़ूब हँसाने खेलाने वाली,
एक-दम नई पुस्तक।
मूल्य केवल ॥=) दस आने।

मिलने का पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

ध्रुव-प्रदेश

सम्पादक — श्रीनाथ सिंह
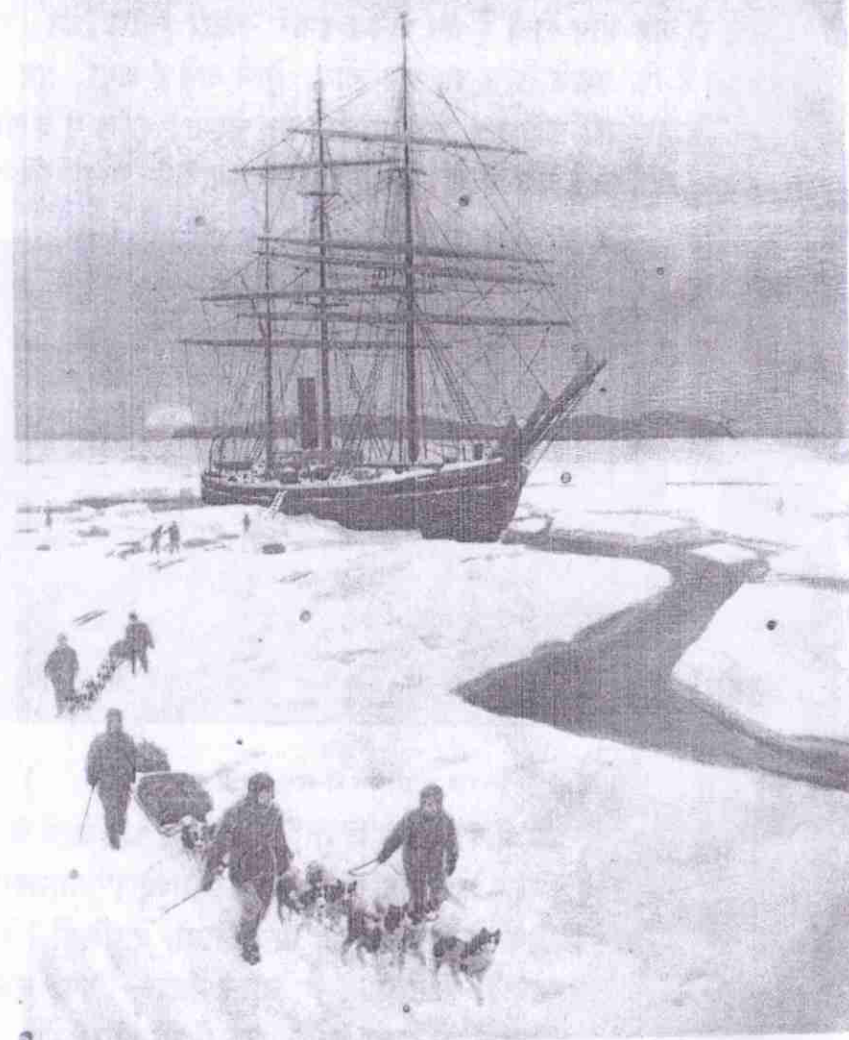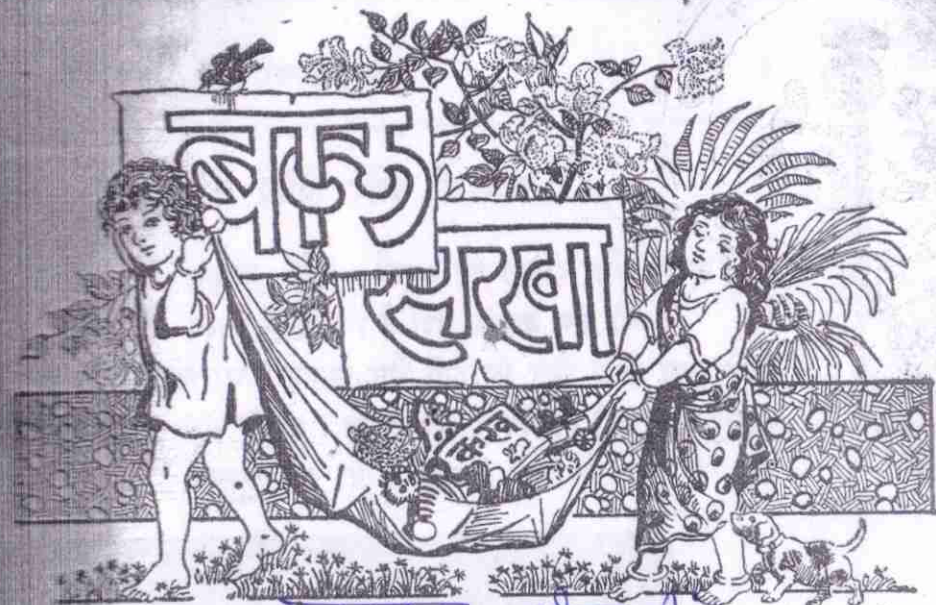
[illegible] १३] जनवरी १९२९—पौष १९८५ [संख्या १

न्यौछावर अपना प्राण करूँ

वरदान यही दो, हे भगवन्, अपनी मा के दुख दूर करूँ ।
विद्वान बनूँ, धनवान बनूँ, सब विधि मा का भंडार भरूँ ।
दुख शोक शीश पर जो आयें, सानन्द उन्हें मन्ज़ूर करूँ ।
विचलित होऊँ पग एक नहीं, विघ्नों को चकनाचूर करूँ ।
बस यही विनय है, हे स्वामिन, अपनी मा का कल्याण करूँ ।
हँस हँस कर उसके चरणों पर, न्यौछावर अपना प्राण करूँ ।

श्रीमनोरञ्जन एम० ए०

आदमी और अँधेरे की लड़ाई

राम और रावण की लड़ाई बड़ी मशहूर है, महाभारत की लड़ाई भी कम मशहूर नहीं है। हाल में योरप की बड़ी लड़ाई का नाम तुमने सुना होगा और चिड़ियों और जानवरों की लड़ाई का हाल तुमने अपनी पहली या दूसरी किताब में पढ़ा होगा। पर ये सब लड़ाइयाँ बहुत थोड़े समय तक रहीं। कोई दो चार दिन, कोई दो चार साल।
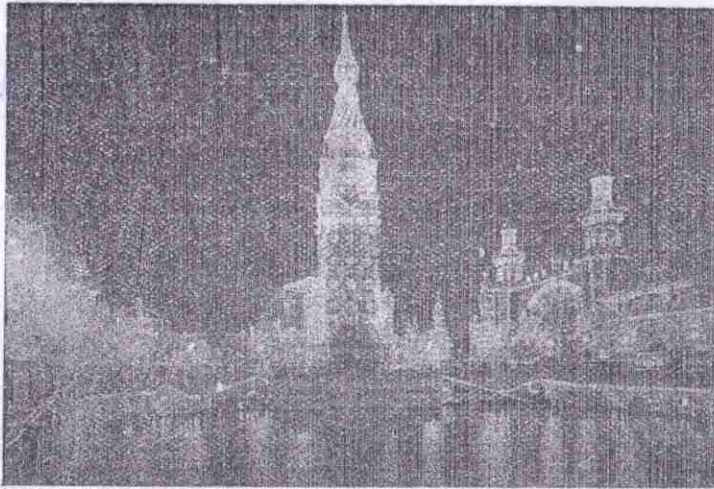
साठ हज़ार बिजली के लैंपों से सजा हुआ एक बाग़

आदमी और अँधेरे की लड़ाई को शुरू हुए कई युग हो गये। जब से यह संसार बना है तब से आदमी और अँधेरे की लड़ाई हो रही है। अभी कब तक होगी, इसका कुछ पता नहीं।

हर एक लड़ाई का एक कारण हुआ करता है। आदमी और अँधेरे की लड़ाई का भी एक कारण है। शायद तुम यह न जानते होगे कि अँधेरा

बड़ा आलसी होता है, उसके आँख नहीं होती, वह हमेशा सोता रहता है। सूरज डूबते ही जब शाम होती है तब अँधेरा हमारे चारों तरफ़ छा जाता है। वह चाहता है कि उसके साथ हम सब लोग सोने लगें। अगर तुम उसकी बोली सुनो तो वह यही कहेगा—"सो जाओ! लेट जाओ! आँख मूँद लो!" जानवर, चिड़ियाँ, सब उसके वश में हैं। कहते हैं पुराने ज़माने के आदमियों ने अँधेरे से ही
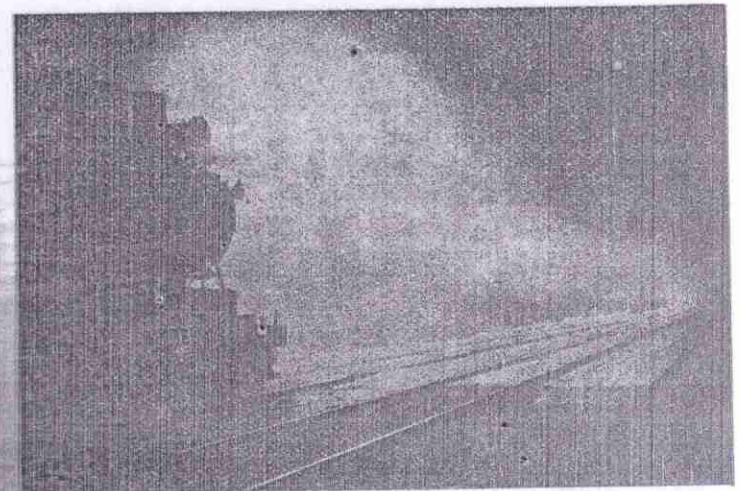
रेल के इंजिन में सर्च लाइट लगी है

[illegible] किसी किताब में यह लिख दिया कि—"दिन काम करने के लिए है और रात सोने के लिए। दिन को काम करो, रात को सोओ।" जानवरों ने इस बात को मान लिया, चिड़ियों ने इस बात को मान लिया, मछलियों ने इस बात को मान लिया। पर आदमी नहीं माना। उसने कहा—"हम संसार में काम करने आये हैं, हम दिन में भी काम करेंगे, रात में भी काम करेंगे, हम आलसी नहीं हैं।" [illegible] आदमियों में तभी से आलसी होना बुरा समझा जाने लगा और [illegible] [illegible] में और अँधेरे में लड़ाई छिड़ गई।
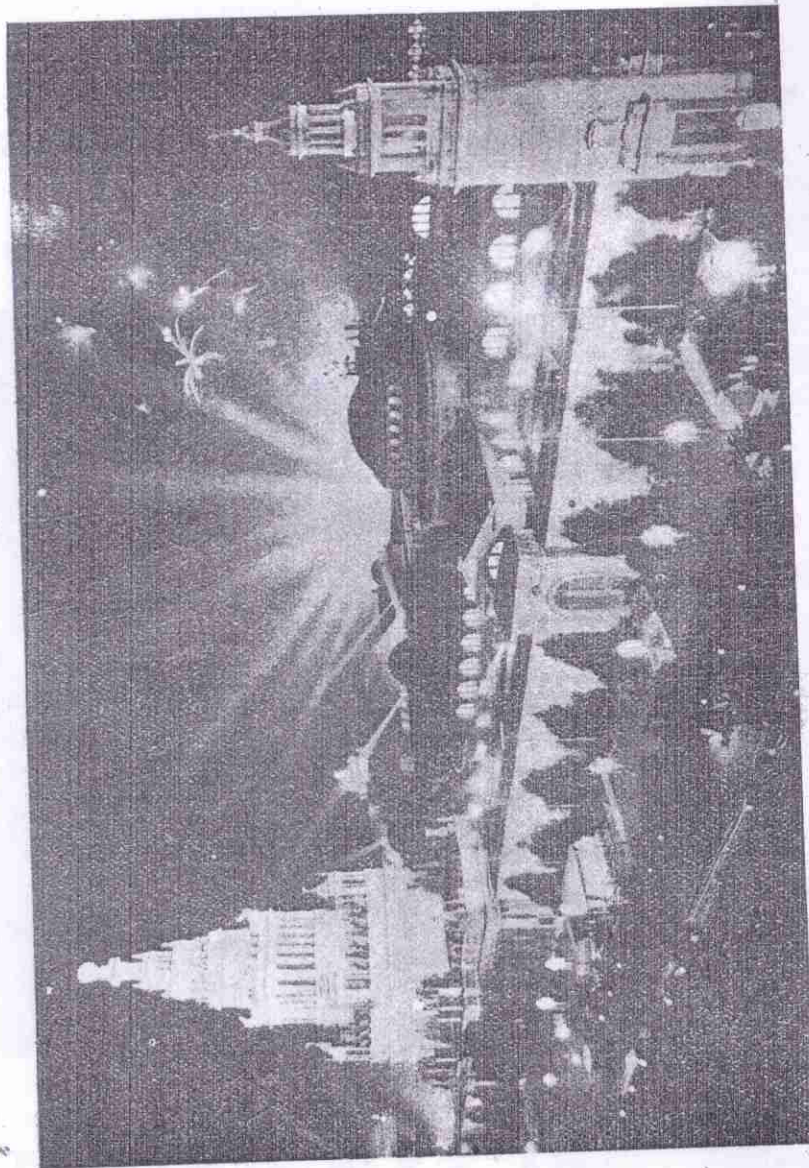
पनामा का प्रकाश-प्रदर्शन —रात की रोशनी में नगर कैसा सुन्दर मालूम हो रहा है

आदमी ने चिराग़ बनाया, मोमबत्ती बनाई, लैंप बनाया, लालटेन बनाई। यह सब किसलिए ? अँधेरे को भगाने के लिए। तुम बता सकते हो, आदमी और जानवर में क्या फ़रक़ है ? यही कि आदमी अँधेरे को भगा सकता है और जानवर अँधेरे को नहीं भगा सकता—आदमी चिराग़ जला सकता है जानवर नहीं जला सकता—आदमी आग से काम ले सकता है जानवर नहीं ले सकता।

आदमी का सबसे बड़ा गुण यह है कि वह अपने दुश्मन को हराने के लिए हमेशा कोशिश करता रहता है। धीरे-धीरे आदमी ने गैस की रोशनी
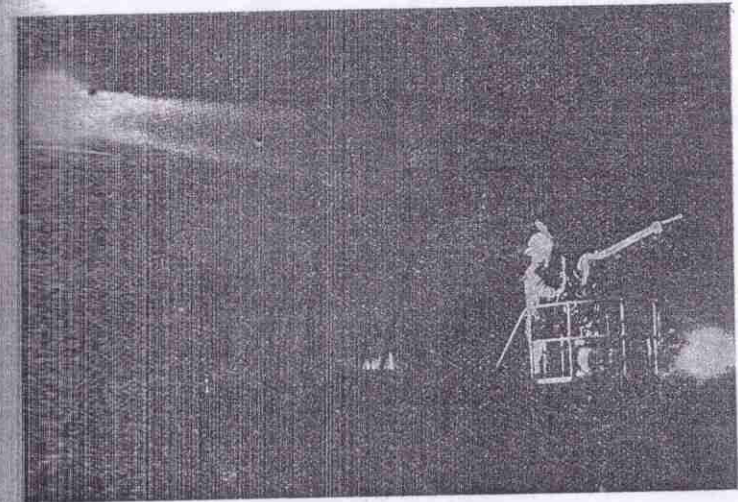
जहाज़ में सर्चलाइट लगी है

[illegible] आतिशबाज़ी बनाई। सड़कों पर जगमग होने लगा, ब्याह-शादी में [illegible] छूटने लगी। ज़मीन पर, रेलगाड़ी में और पानी में, जहाज़ों में [illegible] लैंप लगाये गये। समुद्रों में बड़े बड़े खम्भे गाड़कर उनमें [illegible] की ताक़त के लैंप लगाये गये। मोटर की जलती हुई

आँखें तो तुमने भी देखी होंगी। वह रात का दिन बनाती हुई पोंपों करती चली जाती है। अब अँधेरा परेशान है। बेचारा करे तो क्या करे। उसकी बहिन नींद पहले आदमी को रात में सुला देती थी पर जब से रेल चली है, कल-कारख़ाने खुले हैं तब से लाखों आदमी दिन को सो लेते हैं और रात भर
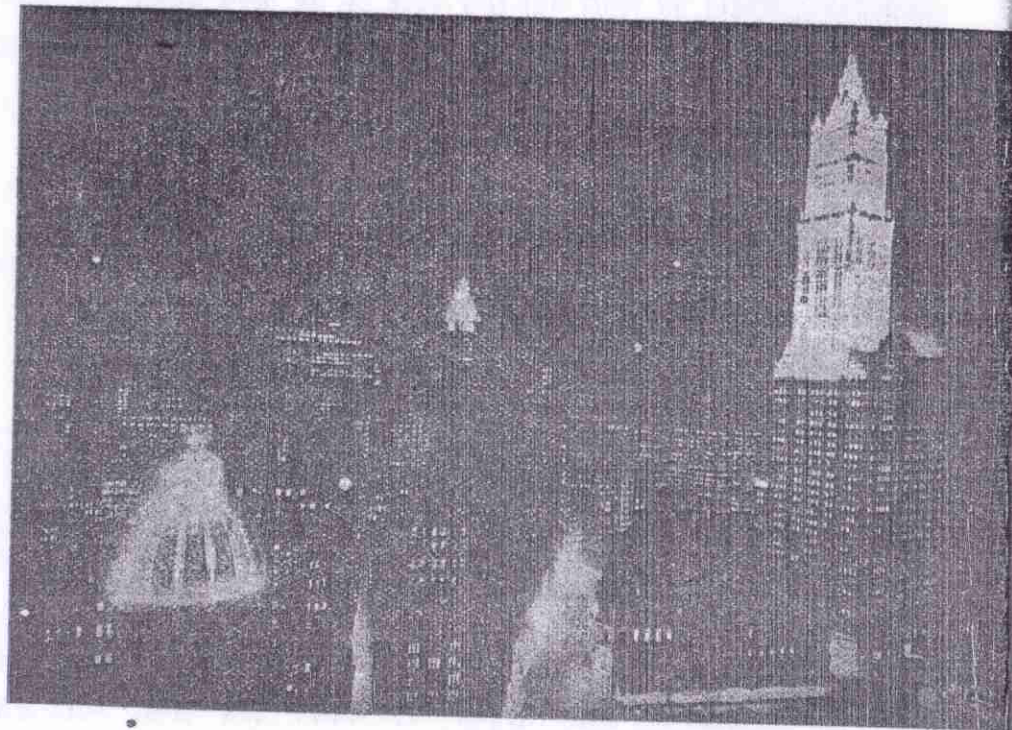
रात के प्रकाश में अमरीका का न्यूयार्क नगर

जगते रहते हैं तथा अँधेरे को भगाते रहते हैं। यही नहीं, अब बिजली की रोशनी भी आदमी ने बना ली है। बटन दबाई और अँधेरा भगा। बड़े बड़े शहरों में अब तुम रात को निकलो तो तुम्हें चारों तरफ़ दिवाली

[illegible]-सी रोशनी दिखाई पड़ेगी। लोगों का कहना है कि अमरीका का न्यूयार्क [illegible] रात को ख़ूब चमकता है।

कहते हैं अब अँधेरा घरों से निकलकर पेड़ों पर रहेगा। परन्तु वहाँ
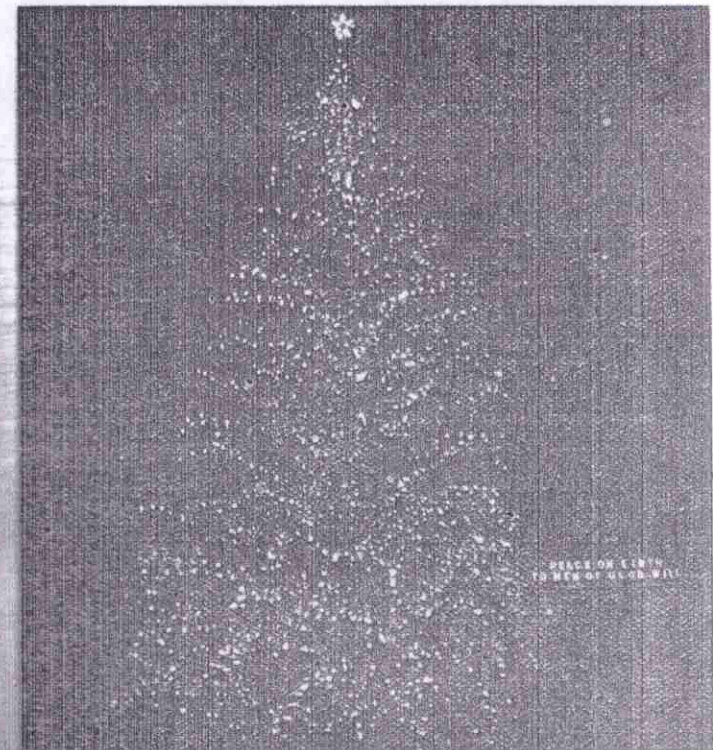
पेड़ में हज़ारों लैंप लगे हैं

[illegible] पावे तब न? पेड़ों पर लोग बिजली की बत्तियाँ डाल डाल में लगा [illegible] बटन दबा देंगे, बस अँधेरे राम की नानी मर जायगी।

[illegible] अभी तक यह था कि अँधेरा कहीं न कहीं—वनों, पर्वतों में रह [illegible] पर आदमी यह सोच रहे हैं कि अँधेरा संसार में कहीं रहने ही न

पावे, यानी कहीं रात होने ही न पावे। इसके लिए आदमी क्या करेंगे, जानते हो? वे ऐसे यंत्र बनावेंगे कि सूरज चाहे जहाँ हो उसकी किरणें संसार में चारों तरफ़ पहुँचें। कुछ लोग ऐसा भी सोच रहे हैं कि वे सूरज की ज़्यादा रोशनी एक यंत्र के द्वारा इकट्ठी करके रक्खेंगे और जहाँ ज़रूरत पड़ेगी वहाँ उसको काम में लायँगे।

यहीं तक आदमी न ठहरेगा। अँधेरे को हटाने के बाद वह संसार को लाभ पहुँचाने में सूरज की किरणों से बाज़ी मार ले जायगा। ऐसी ऐसी बनावटी रोशनी पैदा करेगा जिनमें सब रोग दूर हो जायँगे, पौधे बड़ी तेज़ी से बढ़ेंगे, बछड़ा दो दिन में बैल हो जायगा और अंडे से मुर्ग़ी का बच्चा निकलते ही पूरा मुर्ग़ा बन जायगा। हाँ, इन सब बातों के लिए अभी कुछ समय लगेगा।

लक्ष्मीधर बाजपेयी

पहेलियाँ *

(१)

पहला आधा कितना छोटा,
और दूसरा कितना खोटा,
लखन कही कोइ उलटे पावे,
सीधा मेरा तीर्थ कहावे।

(२)

आदि कटे तो वध हो जाय,
मध्य कटे नीचे अधियाय,
अन्त कटे अब ही रह जावे,
कुछ न कटे कोइ प्रान्त बतावे।

रामदास गौड़, एम० ए०

* इन पहेलियों का जवाब सोचो। अगर जवाब न निकल सके तो देखो पृष्ठ २१—सं०।

बालकों के चार काम
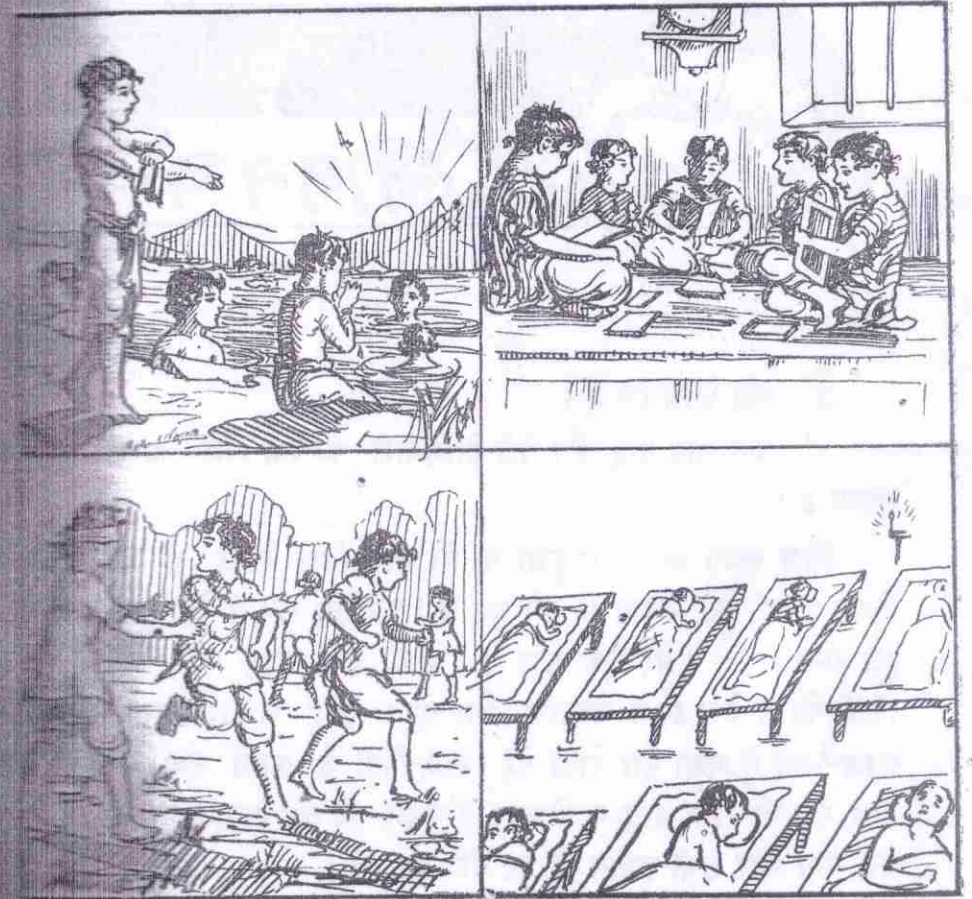
प्रातः स्नानं, दिने विद्याभ्यासः, सायं च खेलनम्।
रात्रौ निद्रा सुप्रगाढा—बालकर्म चतुष्टयम्॥

गङ्गानाथ झा

सुबह नहाना, दिन को पढ़ना, ख़ूब खेलना जब हो शाम,
गाढ़ी नींद रात को सोना, यही चार लड़कों के काम।

मैं बड़ा होशियार हूँ।

मेरा नाम बुद्धू है। मेरी होशियारी का पता मेरे नाम से ही चल सकता है।

जिस समय मेरा जन्म हुआ था मेरे माता-पिता दोनों ही घर पर न थे। किसी पड़ोसी की बारात में गये हुए थे। इसलिए जब मैं पैदा हुआ तो घर में पूरा सन्नाटा था। मेरे एक चचा थे। वे भी कहीं बाहर गये हुए थे। घर में किसी को न देखकर मैं घबड़ाया और बहुत ज़ोर से रोने लगा। बारात की चहल-पहल में भला मेरा रोना मेरे माता-पिता के कानों तक क्या पहुँचता। मगर मैंने भी रोना बन्द न किया। पाँच-छः घंटे तक लगातार रोते रहने से मैं थक गया और मुझे ज़मीन ही पर नींद आ गई।

जब दूसरे दिन सुबह मेरी आँख खुली तो फिर भी मा न आई थी। न बाप आये थे। न चचा साहब आये थे। द्वार बंद के बंद ही थे। अब मुझे पैदा हुए लगभग सोलह घंटे हो चुके थे इसलिए बड़ी ज़ोर की भूँख लग आई थी। मैं भूँख के मारे घबड़ा उठा और धीरे-धीरे लुढ़कते पुढ़कते दूसरे कमरे में जा पहुँचा। वहाँ ज़मीन पर ही रक्खी एक बड़ी पोटली नज़र आई जिसमें चूहों ने सूराख कर रक्खा था। उसी सूराख में मैंने अपना छोटा-सा हाथ डाला और मुट्ठी भर भर मुँह में डालने लगा। जब मेरा पेट भर गया और पोटली भी आधी के क़रीब हो गई तो मैंने

सोचा कि देख तो लेना चाहिए मैं क्या खा रहा था। फिर एक मुट्ठी भर कर निकाली तो देखा कि पोटली में बैल के लिए भूसी बँधी हुई थी। अब तो मैं बड़ा घबड़ाया। मुझे यह डर लगा कि भूसी खा कर कहीं मेरे सींग और पूँछ न निकल आये। सिर पर हाथ फेरा तो सींगों के निकलने का कुछ पता न चला। अब पूँछ की फ़िक्र पड़ी। उधर भी टटोलने लगा मगर हाथ वहाँ तक नहीं पहुँचे। और पहुँचते भी कैसे? अभी तो पैदा ही हुआ था। छोटे छोटे हाथ थे। अब मेरी घबड़ाहट का कुछ ठिकाना ही न रहा। हर समय यही डर लगता था कि कब पूँछ निकल पड़े।
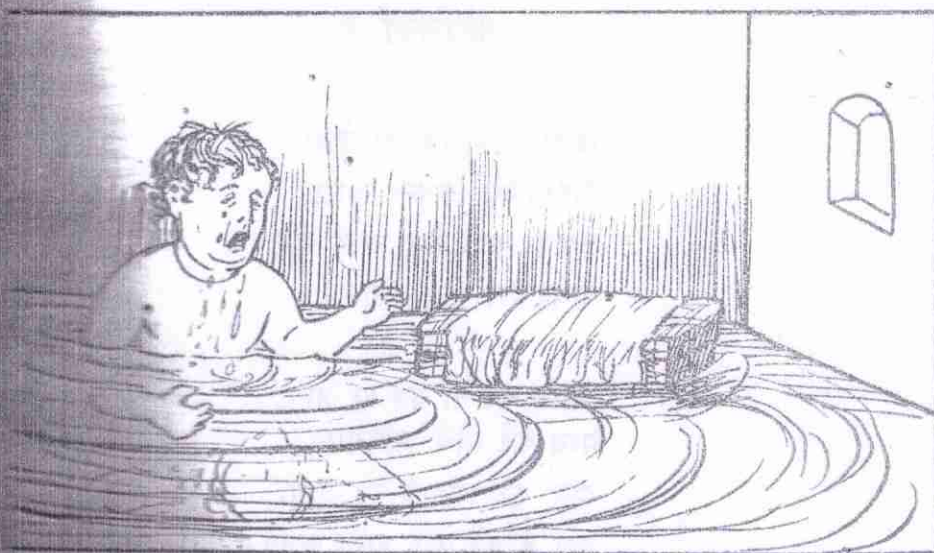
कमरा तालाब होगया

[illegible] मैंने फिर रोना शुरू किया। बहुत रोया। रोते रोते इतने आँसू [illegible] कमरा तालाब हो गया। अब मैं और पोटली दोनों उस पर तैरने [illegible] पोटली मुझे ललचाने को मेरी ही ओर आ रही थी मगर मैंने उसकी [illegible] नहीं। इसी तरह एक घंटे के लगभग तैरने के बाद किवाड़

खुलने की आहट हुई। इतने में चचा साहब उस भूसीवालेकमरे में चले आये जहाँ मैं तैर रहा था।

मुझे देखकर चचा साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ। घर में कोई बच्चा आज तक पैदा ही नहीं हुआ था। उनकी समझ में नहीं आया कि मैं कहाँ से आया। पोटली की तरफ़ उनकी निगाह पड़ी तो उसमें उन्होंने एक छेद देखा। मेरे चचा साहब घर भर में सबसे अधिक बुद्धिमान् थे। उन्होंने समझ लिया कि मैं पोटली में से पैदा होकर उस छेद में से निकल आया हूँगा। उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई। उनके भी कोई औलाद नहीं थी। शादी उन्होंने की नहीं थी। बड़े प्रफुल्लित हो गये। औलाद सबों को पसन्द होती है। झट कपड़े उतार कर तालाब में कूद पड़े और मुझे निकाल लाये। मेरा बदन पोंछ कर गुदगुदे कपड़ों में मुझे लपेट कर सुला दिया।

जब मैं जगा तो मैंने देखा कि मेरे माता-पिता बारात से लौट कर आ गये हैं और उनकी तथा चचा की बड़ी ज़ोर से बातें हो रही हैं। मेरे मा-बाप कहते थे कि मैं उनका बच्चा हूँ मगर चचा साहब पोटली के छेद की ओर इशारा करके कह रहे थे कि मैं पोटली से निकला हूँ और ईश्वर का दिया हुआ उनका लड़का हूँ। मैं जानता था कि मैं अपने मा-बाप का बच्चा हूँ मगर कल ही का पैदा हुआ किस तरह बोल सकता था। चुपचाप पड़ा रहा। इसी तरह लड़ाई कुछ देर तक होती रही और अन्त को यह निश्चय हुआ कि मैं अपने मा-बाप का बच्चा और चचा साहब का लड़का कहलाऊँगा और पोटली मेरी विमाता होगी।

पोटली का नाम सुनते ही मुझे फिर भूसी की याद आगई और मैं रोने लगा। सबके सब घबड़ाये कि क्या बात है जो मैं रो रहा हूँ। मेरी मा मुझे दूध पिलाने लगी लेकिन मुझे तो सींग और पूँछ निकलने का डर लगा हुआ था। बोलना आता तो मा से सारा हाल कह डालता मगर लाचार था। रोते रोते मेरा पेट बह चला। मैंने घबड़ा कर देखा कि कहीं गोबर तो नहीं निकला। गोबर नहीं था। बस फिर मेरे हर्ष का कोई ठिकाना न रहा। मुझे विश्वास हो गया कि मैं बैल नहीं होने का।

हरदत्त पंत, बी० ए०

राम

(द्विपद)

कौन है? है जिसे न प्यारा राम।
राम के हम हैं, है हमारा राम ॥१॥
है दुखी दीन पर दया करता।
बे-सहारों का है सहारा राम ॥२॥
तब वहीं पर खड़ा मिला 'न किसे।
जब जहाँ पर गया पुकारा राम ॥३॥
है सभी जीव जुगनुओं जैसे।
है चमकता हुआ सितारा राम ॥४॥
है समझ बूझ सिर का सेहरा वह।
सूझ की आँख का है तारा राम ॥५॥
हैं जहाँ संत हंस पल पाते।
मानसर का है वह किनारा राम ॥६॥
है मनों में बसा हुआ सबके।
है दिलों का बड़ा दुलारा राम ॥७॥
छू गये पाप-फूस है फुँकता।
है दहकता हुआ अँगारा राम ॥८॥
भूत सिर का उतर सका जिससे।
है सयानों का वह उतारा राम ॥९॥
तर गये लोग धुन सुने जिसकी।
साधुओं का है वह दुलारा राम ॥१०॥

अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध'

भङ्गियों की तोप

लाहौर में एक बहुत बड़ी पुरानी तोप है। वह अजायब-घर के सामने एक उठे हुए चौंतरे पर रक्खी हुई है। इसके निकट ही गोल बाग़ है। जो लोग इस बाग़ में हवा खाने या अजायब-घर देखने आते हैं वे इस तोप को भी ज़रूर देखते हैं।

यह तोप १४ फ़ुट और साढ़े चार इंच लम्बी है। इसके मुँह का सूराख़ साढ़े नौ इंच है। तीन पहिये हैं—दो बहुत बड़े बड़े और एक छोटा। कई पीतल के मोटे और भारी कड़े हैं।

ZAM-ZAMMAN, LAHORE
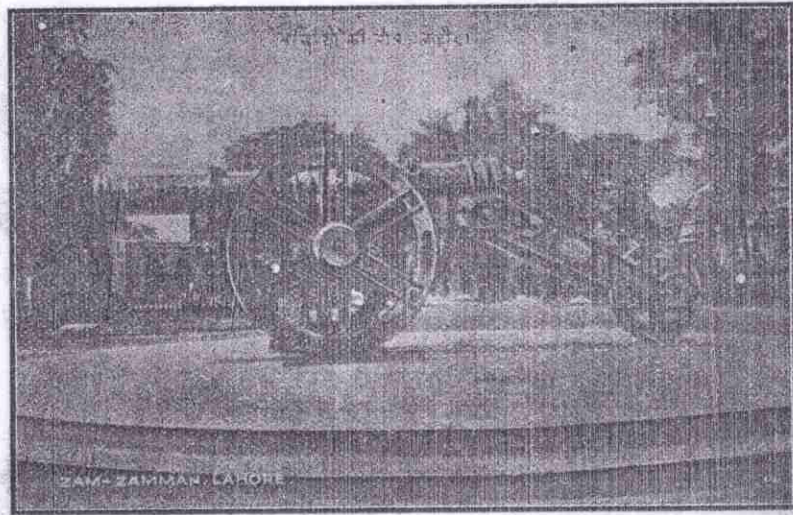
अहमद शाह दुर्रानी नाम का एक पठान बादशाह हुआ है। कोई पौने दो सौ वर्ष हुए उसने काबुल से पंजाब पर धावा किया था। उसके मन्त्री का नाम शाहवली ख़ाँ था। इस मन्त्री की आज्ञा से, सन् १७५७ ईसवी में, शाह नज़ीर ने इस तोप को ढाला था। यह लाहौर ही में बनाई गई थी। इसके

बनाने के लिए, लाहौर के हर एक हिन्दू-घर से एक एक धातु का बर्तन लाया गया था। हिन्दुओं ने ये बर्तन ख़ुशी से नहीं दिये थे। उनसे ये 'जज़िया' अर्थात् टेक्स के रूप में ज़बर्दस्ती लिये गये थे। इसलिए यह तोप ताँबे और [illegible] की मिलावट से बनी है।

अहमद शाह ने सन् १७६१ ईसवी में, पानीपत की लड़ाई में इसको [illegible] था। काबुल को लौटते समय वह इसे ख़्वाजा उबेद के पास छोड़ [illegible]। यह ख़्वाजा पंजाब में उसकी ओर से अफ़सर था। सन् १७६२ ई० में [illegible] भङ्गी ने ख़्वाजा पर धावा करके उसे हरा दिया। लाहौर के निकट [illegible] नाम के गाँव में उबेद के गोला-बारूद और अस्त्र-शस्त्र थे। वे सब [illegible] के हाथ आये। यह तोप भी वहीं उसे मिली। पहले इसका मुसलमानी [illegible] था। पर हरीसिंह भङ्गी के हाथ आ जाने के कारण यह भङ्गियों [illegible] कहलाने लगी। भङ्गी सिक्खों की एक ज़ात का नाम है, कहीं मिहतर [illegible]।

[illegible] से यह गूजरसिंह, लहनासिंह, झण्डासिंह भङ्गी, और पीर-मुहम्मद [illegible] दूसरे सरदारों के पास चली गई। वे इसे गुजराँवाला, रामनगर, [illegible] अमृतसर में लिये फिरे। सन् १८०२ ई० में, अमृतसर में यह [illegible] के हाथ आई। उन्होंने कसूर, सुजानपुर, वज़ीराबाद, [illegible] में इससे काम लिया। सन् १८१८ ई० में, मुलतान की लड़ाई में [illegible]। तब इसे निकम्मी समझ कर लाहौर लाया गया। लाहौर में [illegible] १८७० तक दिल्ली दरवाज़े के पास पड़ी रही। फिर, वहाँ से उठा कर, [illegible] के सामने लाया गया। तब से यह यहीं पड़ी है।

[illegible] के अक्षर काट कर, फ़ारसी भाषा में लिखा हुआ है [illegible] दुर्रानी की आज्ञा से यह साँप के समान डरावनी और पर्वत के

समान लम्बी-चौड़ी तोप बनाई गई। यह आकाश के क़िले को भी तोड़ डालने वाली है। कहते हैं जब यह तोप चलती थी तो इसके धमाके से माताओं के पेट से बच्चे गिर पड़ते थे। इसके साथ की एक तोप और भी थी। पर वह चनाव नदी में डूब गई।

पुराने समयों में ऐसी तोपें ही बड़े अचरज की चीज़ समझी जाती थीं। पर अब तो ऐसी ऐसी तोपें बन गई हैं जो बहत्तर बहत्तर मील की दूरी पर गोला फेंक सकती हैं।

सन्तराम बी० ए०

मेरा तोता

पढ़ता है नित मेरा तोता, कभी न मुझसे गुस्सा होता।
फूले चने खिलाता हूँ मैं, पानी उसे पिलाता हूँ मैं।
कहता है वह 'गङ्गाराम', कभी 'परपते' 'राधेश्याम'।
कभी 'चित्रकोटी' कहता है, कभी 'दूध रोटी' कहता है।
चोंच ख़ूब है उसकी लाल, हरे हरे सुन्दर हैं बाल।
और गले में कण्ठी काली, दूनी करती है हरियाली।
बोली से मन हरता है वह, पर बिल्ली से डरता है वह।
जब बिल्ली मौसी आती है, उसकी नानी मर जाती है॥

देवीप्रसाद गुप्त, कुसुमाकर
बी० ए०, एल-एल० बी०

स्वामिभक्त मोती

(१)

बहुत समय गुज़रा, काशी में एक लड़का रहा करता था। उसका नाम ज़ालिमसिंह था। वह कभी किसी से नेकी [illegible] और हर समय अत्याचार करने पर कमर कसे रहता था। उसके पास [illegible] एक कुत्ता था। यह कुत्ता अपने मालिक का बड़ा बफ़ादार था, [illegible] उसके साथ-साथ रहता था। और इतना ही नहीं वह तो उसकी [illegible] करने को भी तैयार रहता था। मगर ज़ालिमसिंह इतना ज़ालिम [illegible] था कि उसे खाने को रोटी का टुकड़ा भी न देता था। बेचारा [illegible] से पेट भर लेता और फिर अपने मालिक के पास आ [illegible]

(२)

[illegible] क्या हुआ कि ज़ालिमसिंह दरिया पर सैर को गया और [illegible] गया। सरदी के दिन थे, और उस पर सुबह का समय था। [illegible] की नाईं ठंडा था। ज़ालिमसिंह को दरिया में गिरते [illegible]। मगर कोई भी उसकी सहायता को आगे न बढ़ा क्योंकि [illegible] वह बहुत ही बुरा लड़का है। परन्तु यह देखकर मोती से [illegible] चारों ओर देखकर भौंका। इससे उसका मतलब यह था कि [illegible] बचाओ। मगर जब किसी ने उसकी आवाज़ पर ध्यान [illegible] ही पानी में कूद पड़ा और तैरकर अपने मालिक के

पास जा पहुँचा। इस समय ज़ालिमसिंह बिलकुल बेहोश था और पानी की धार में बहा जाता था। मोती ने उसका कुर्ता अपने दाँतों में पकड़ लिया और उसे घसीट कर किनारे पर ले आया। मगर ज़ालिमसिंह की टोपी पानी में रह गई। ज्योंही ज़ालिमसिंह को होश आया उसने कुत्ते को उठाकर फिर पानी में फेंक दिया और कहा—"जा, जाकर मेरी टोपी ले आ। हरामी कहीं का, देखता नहीं, पानी में बही जाती है।"

ग़रीब जानवर सरदी के मारे काँप रहा था मगर क्या करता? मालिक की आज्ञा थी इसलिए फिर तैर कर गया और ज़ालिमसिंह की टोपी ले आया। ज़ालिमसिंह ने टोपी ले ली और मोती को फिर उठाकर पानी में फेंक दिया।

अब मोती बहुत थक गया था और उसका ख़ून भी जम गया था इसलिए तैर न सकता था। यह देखकर ज़ालिमसिंह ने ज़ोर से कहकहा लगाया और कहा—"वाह मियां मोती! तूने तो मुझे बचाया था। अब आप भी पानी से नहीं निकल सकता। तेरे जैसे निर्बल मित्र की मुझे बिलकुल आवश्यकता नहीं। अब मेरे पास कभी न आना।"

यह कहकर ज़ालिमसिंह मज़े से शहर की तरफ़ चला गया। मोती कुछ देर तक तो पानी में मुर्दों की तरह बहता रहा फिर साहस करके किनारे आ लगा और धूप में लेट रहा।

(३)

उधर ज़ालिमसिंह शहर को जा रहा था कि उस पर किसी डाकू ने आक्रमण कर दिया। इस डाकू को विश्वास था कि इस लड़के के पास ज़रूर कुछ न कुछ नक़दी होगी। उसे क्या मालूम था कि यह लड़का ख़ुद ग़रीब है और पैसे पैसे को मोहताज है। उसने ज़ालिमसिंह को पकड़ लिया और उठाकर एक गुफा में

[illegible] जाकर उसने ज़ालिमसिंह से पूछा—"क्यों लड़के! बोल तेरे [illegible]

[illegible] ने रोकर उत्तर दिया, "तुम चाहे मेरी तलाशी ले लो। मेरे [illegible] भी नहीं है।"

[illegible] "ये सब बहाने हैं बहाने! मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूँ कि तेरे दम [illegible]

[illegible] बोला, "तो मेरी तलाशी ले लो। जो कुछ निकले सब [illegible] ने यह बात मान ली और ज़ालिमसिंह की तलाशी ली। मगर [illegible] जो मिलता? ज़ालिमसिंह तो ख़ुद भूखा मरता था। अब [illegible] कि ज़ालिमसिंह मेरा गुप्त-स्थान देख चुका है। अगर मैंने इसे [illegible] यह मुझे पकड़वा देगा। इसलिए अच्छा यही है कि इसे जान [illegible] । ज़ालिमसिंह को जब यह मालूम हुआ तो उसके हाथों के [illegible] वह ज़रा ज़रा रोने लगा। उसने डाकू से दया की प्रार्थना की [illegible] दया करता। वह तो बड़ा निर्दयी, क्रूर और अत्याचारी था। [illegible] निकाल कर ज़ालिमसिंह की गर्दन पर रख दी और उसे मारने को [illegible] । उस समय ज़ालिमसिंह ने अपने दिल में कहा, "मैंने कैसी मूर्खता [illegible] मोती को दरिया में गिरा दिया। अगर वह इस समय मेरे पास [illegible] मुझे कैसे मार सकता? इतने में मोती अपने मालिक की ब[illegible] [illegible] आ पहुँचा। इसने आते ही कूद कर डाकू की गर्दन पर [illegible] दिये। डाकू को लेने के देने पड़ गये। उसकी पकड़ ढीली होगई [illegible] से गिर गई। ज़ालिमसिंह उठकर भाग गया और उसने यह भी [illegible] स्वामिभक्त पशु ने ऐसे विकट समय पर मेरी सहायता की [illegible] के मुंह से बचाया है, मेरा भी उसकी तरफ़ कुछ कर्तव्य है। [illegible] कुछ देर तक उसी तरह दबाये रक्खा और जब वह बेहोश हो

गया तो उसे छोड़कर फिर दुम हिलाता हुआ अपने मालिक के पीछे पीछे चला गया।

(४)

ज़ालिमसिंह भूख और थकान से व्याकुल था और चाहता था कि अगर कुछ खाने को मिल जाय तो पेट भर कर ज़रा विश्राम करे। किन्तु खाना कहाँ से मिलता ? उसने तो इस समय तक कोई काम न किया था।

ज़ालिमसिंह ने लाचार आते जाते लोगों से भीख माँगना शुरू किया। मगर उसकी छोटी आयु और हट्टा-कट्टा शरीर देखकर लोग उससे हँसी-ठट्ठा करके अपनी राह चले जाते थे। इसी तरह तीसरा पहर हो गया, ज़ालिमसिंह के पेट में चूहे दौड़ने लगे। हार कर वह एक अमीर आदमी के मकान में घुस गया। और रसोई में जाकर खाने पर टूट पड़ा। परन्तु अभी उसने खाने से हाथ न खींचा था कि घर का एक नौकर उधर आ निकला। उसने ज़ालिम-सिंह को देखते ही चोर चोर का शोर मचाना शुरू कर दिया। ज़ालिमसिंह ने सोचा कि अगर इसकी आवाज़ किसी ने सुन ली तो पकड़ लिया जाऊँगा इस-लिए इसने एक बड़ा-सा पत्थर उठाकर नौकर पर दे मारा। वह नौकर [illegible] गिरा और गिरने के साथ ही मर गया। अब ज़ालिमसिंह हैरान था कि क्या करें और किधर जावें उसे चारों ओर मौत ही मौत दिखाई देती थी। इतने में घर के मालिक ने आ उसे पकड़ लिया और राजा की कचहरी में पेश किया।

राजा ने आज्ञा दी कि ज़ालिमसिंह ने एक आदमी को जान से मार दिया है इसलिए उसे क़त्ल कर दिया जाय। ज़ालिमसिंह बहुतेरा रोया मगर वहाँ कौन सुनता था ? 'जैसी करनी वैसी भरनी'।

(५)

दूसरे दिन नियत समय पर सरकारी जल्लाद ज़ालिमसिंह को क़त्ल करने को तैयार हुआ। हज़ारों आदमी आस-पास खड़े थे और बुराई का बदला देख [illegible]

[illegible] उस समय ज़ालिमसिंह का चेहरा लाश की भाँति पीला था! वह [illegible] था कि यदि अब की बार बच जाऊँ तो फिर कभी किसी से [illegible] न करूँ। परन्तु यह कैसे हो सकता था! क़ानून को बदलना [illegible] नहीं।

[illegible] समय ज़ालिमसिंह का कुत्ता मोती भीड़ में खड़ा यह तमाशा देख रहा [illegible] ज्योंही अपने मालिक को देखा तो दुम हिलाता हुआ आगे बढ़ा [illegible] पैरों में लोटने लगा। जल्लाद ने उसे हटाने का बहुत यत्न किया
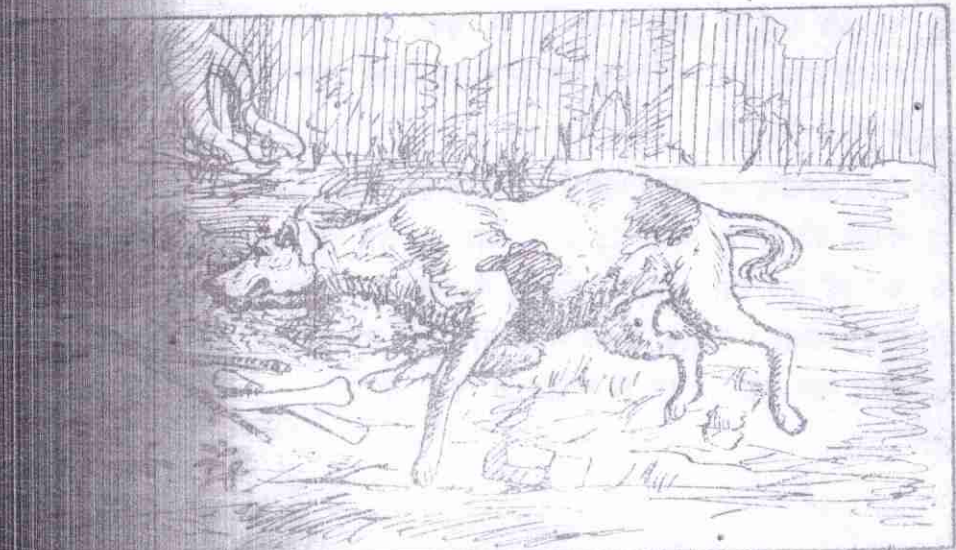
मोती वहीं पड़ा रहा और अन्त में मर गया

[illegible] अन्त में जल्लाद ने उसे उठाकर भीड़ से बाहर फेंक दिया [illegible] क़त्ल कर दिया। थोड़ी देर बाद स्वामिभक्त कुत्ता वापिस [illegible] मालिक मर चुका था। यह देखकर मोती की आँखों में आँसू [illegible] अपने मालिक के मुँह पर अपना मुँह रख दिया। लोगों ने

उसे ज़बर्दस्ती दूर किया और ज़ालिमसिंह का मृत शरीर जला दिया। मोत
बड़े ज़ोर ज़ोर से भोंकता था और अपने मालिक के पास जाना चाहता था
मगर लोग उसे रोकते रहे।

(६)

रात हो गई, मोती श्मशान में बैठा रहा। दिन चढ़ा, फिर भी वहीं था। व
बार-बार इधर-उधर देखता था कि शायद कहीं से ज़ालिमसिंह आ जाय। मग
वह अब कहाँ से आता! वह तो मर चुका था। क्या कोई मर कर भी क
ज़िन्दा हुआ है? इसी तरह कई दिन तक मोती भूखा-प्यासा वहीं पड़ा रहा औ
अन्त में मर गया।

आकाश में देवता खड़े देख रहे थे कि मोती कब मरता है। उनमें
देवता की जगह खाली हुई थी, और वह श्रेष्ठ और पवित्र आत्मा की प्रती
कर रहे थे। उस दिन देवताओं ने बड़ी ख़ुशी मनाई और मोती को अपने
मिला लिया। क्योंकि उसने स्वामिभक्ति की शर्त पूरी की थी और मालिक
लिए जान तक भी देने से संकोच न किया था।

सुदर्शन

उत्तर

पृष्ठ ८ पर जो पहेलियाँ छपी हैं उनके उत्तर—

(१) कनखल, (२) अवध

बालक की कल्पना

भैया! हमें होता तब कितना अपार हर्ष,
होते हम बालक जो व्रज के अहीर के।
जाकर विपिन में चराते धेनुओं को नित्य,
खाते मनमाने पकवान हम क्षीर के।
चढ़के कदम्ब पर मुरली बजाते मृदु,
मञ्जु दृश्य देखते कलिन्दजा के तीर के।
गाते और नाचते मचाते रस-रङ्ग ख़ूब,
साथ साथ खेलते सदैव बलवीर के।

गोपालशरणसिंह

तेजस्वी बालक की एकान्त-चिन्ता

[illegible] ऐसे न्यायी भाई लक्ष्मण भरत ऐसे
कृष्ण के समान होंगे नीति-बल-धारी हम।
[illegible] ऐसे सत्यवादी, वीर विक्रम-से
[illegible] ऐसे होंगे राज्य-अधिकारी हम॥
[illegible] देवव्रत शङ्कर-से
ऐसे दयानन्द के समान ब्रह्मचारी हम।
[illegible], साहसी शिवाजी ऐसे,
[illegible] के समान होंगे लोक-शोक-हारी हम॥

रामनरेश त्रिपाठी

मूक कहानी
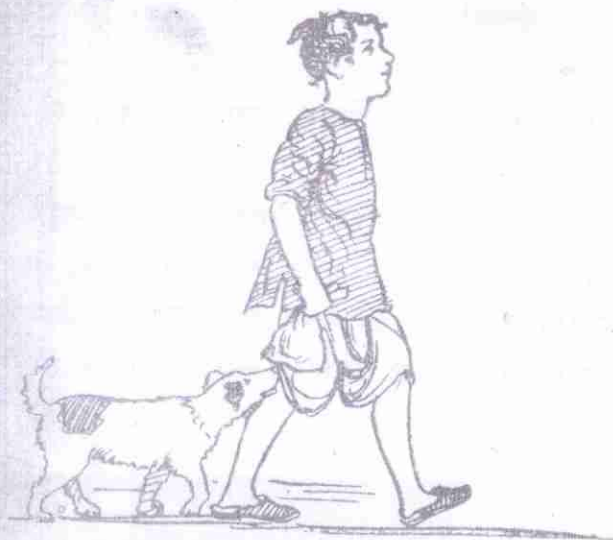
कुत्ता पीछे लड़का आगे ।
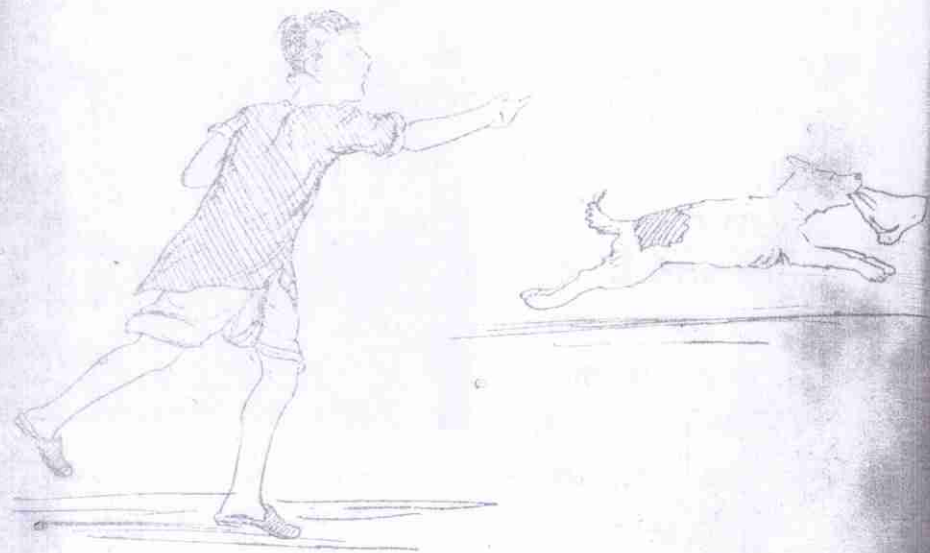
देखो देखो दोनों भागे ॥
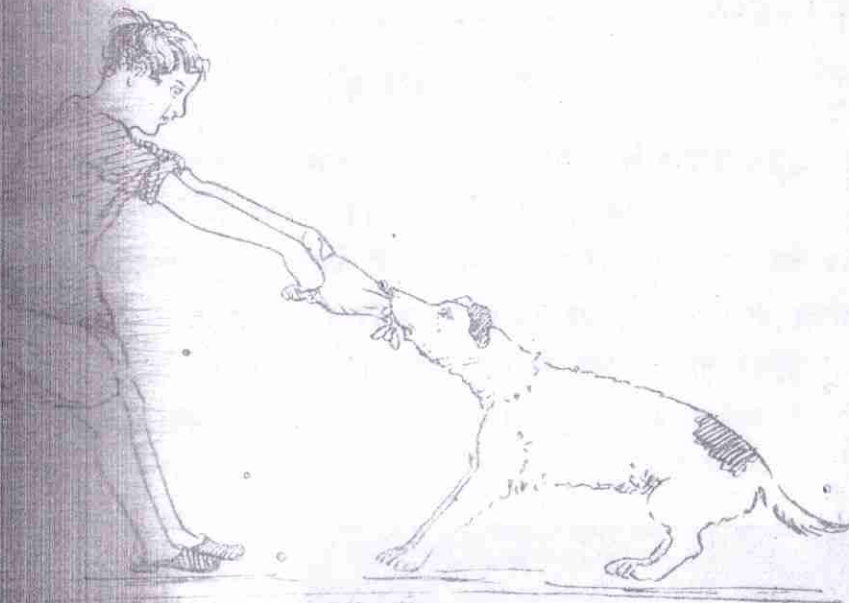
खींचा-खींची होती है अब ।
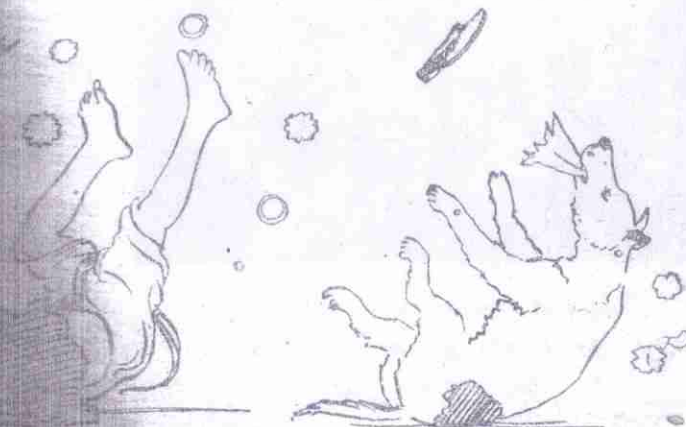
[illegible] यह क्या ? खेल गया सब ॥

यदि जानवरों की चले ?

एक बुढ़िया से किसी ने पूछा—"तू क्या चाहती है?" बुढ़िया ने जवाब दिया—"मैं चाहती हूँ कि मैं अपने बिस्तर पर लेटी रहूँ, लेटी रहूँ और लेटी रहूँ। लेटे लेटे खाऊँ और खाऊँ और .खूब खाऊँ।" बुढ़िया बड़ी काहिल थी। इसलिए उसने ऐसा जवाब दिया।

लेकिन यदि जानवरों से कोई यही सवाल करे तो शायद वे भी इसी तरह की अजीब अजीब बातें कहेंगे। तितली कहेगी—हमेशा सुनहली धूप बनी रहे और रसीले फ़ूल फूले रहें। पर उसी दम मच्छड़ उसे डाटकर कहेगा—रहने दो, हमें अँधेरा चाहिए। अँधेरे में आदमी का .खून चूसने में बड़ा मज़ा आता है। शायद उल्लू और चमगादड़ मच्छड़ के सुर में सुर मिलाने लगें पर और जानवर इस बात पर राज़ी न होंगे।
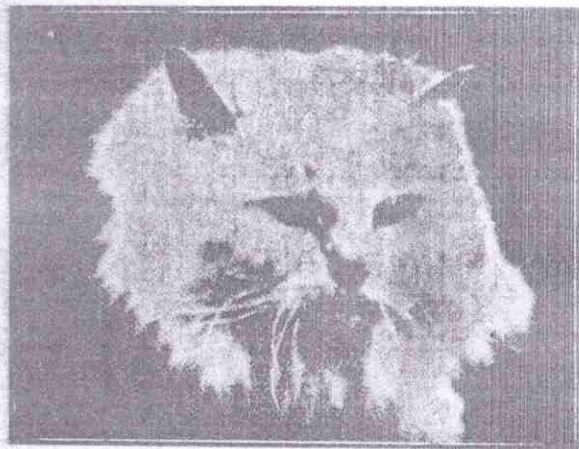
बिल्ली रानी शायद यह मना रही हैं कि सब चूहों के दाँत टूट जायँ जिससे वे बिल न खोद सकें।

हर एक जानवर अपने ही काम की बात सोचता है। आदमी समझता है कि भगवान आदमी की तरह हैं, बड़े सुन्दर हैं, बड़े दयावान हैं। पर शेर इसका बिलकुल उलटा समझता होगा। उसकी समझ में भगवान के तेज़ दाँत होंगे, बड़े बड़े नाखन होंगे, वे अपने शिकार को बात की बात में चीड़-फाड़ कर रख देते होंगे। शेर का आदर्श यही है। वह चाहता है कि संसार में एक भी

[illegible] न हो, पर .खूब मोटे-ताज़े पशु हों जिससे उसे शिकार करने में [illegible]ई न पड़े।

पेड़ों की पत्तियाँ यह चाहती होंगी कि संसार में एक भी कीड़ा न रहने [illegible] क्योंकि कीड़े पत्तियों को खा जाते हैं। कीड़े चाहते होंगे कि संसार [illegible]यों से ख़ाली हो जाय क्योंकि चिड़ियाँ कीड़ों को खा जाती हैं। और हम [illegible] जानते हैं कि चिड़ियाँ यही चाहती हैं कि संसार में चारों तरफ़ हरे हरे पेड़ [illegible] और उनकी पत्तियों पर .खूब कीड़े हों।

मछलियाँ चाहती हैं कि [illegible] तरफ़ तालाब ही तालाब [illegible] बगुलों का नाश हो जाय [illegible] बगुले चाहते होंगे कि चोंचें [illegible] हो जायँ और उनका [illegible] बड़ा हो जाय कि वे [illegible] मछलियों को पकड़ [illegible] लीलते रहें।
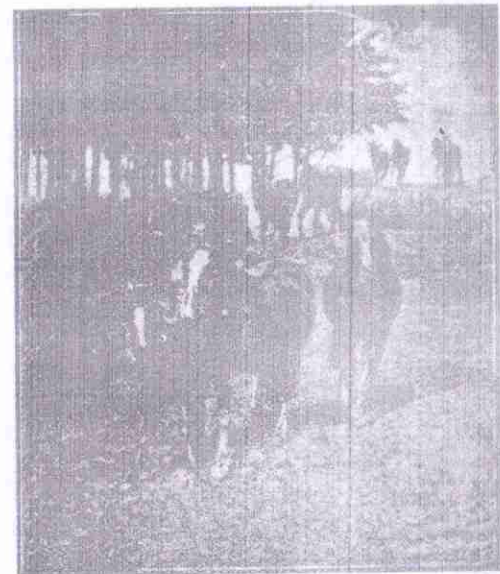
घोड़े चाहते हैं कि यह संसार एक हरा-भरा मैदान हो जाय

[illegible] क्या चाहता है, बता [illegible] वह ईश्वर से रात-[illegible] करता है कि लगाम [illegible] लोहारों का नाश हो [illegible] ढह जायँ, शहर [illegible] का पता न [illegible] उनकी जाति हो और हो हरा-भरा मैदान। गधे की यह हमेशा [illegible] है कि वह भी घोड़े की तरह सुन्दर दिखाई देने लगे पर घोड़े की [illegible] मैदान वह कभी न चाहेगा। उसकी चले तो वह दो दिन में

सारी दुनिया को रेगिस्तान बना दे। उजड़ा और वीरान देश उसे बहुत अच्छा लगता है।

बकरियाँ गधों का साथ दे सकती हैं पर वे इतना और चाहेंगी कि स्थान स्थान पर बेर-बबूल की नीची झाड़ियाँ हों और उनमें खूब पत्तियाँ हों। अफ़रीका में ऊँट की तरह एक जानवर होता है। उसे जिराफ़ कहते हैं। उसकी गरदन ज़रा ऊँची होती है। पर पत्तियाँ वह भी पसन्द करता है। इसलिए वह चाहेगा कि पत्तियाँ ऊँचाई पर हों जिसका मतलब यह है कि बकरियाँ भूखों मर जायँगी।
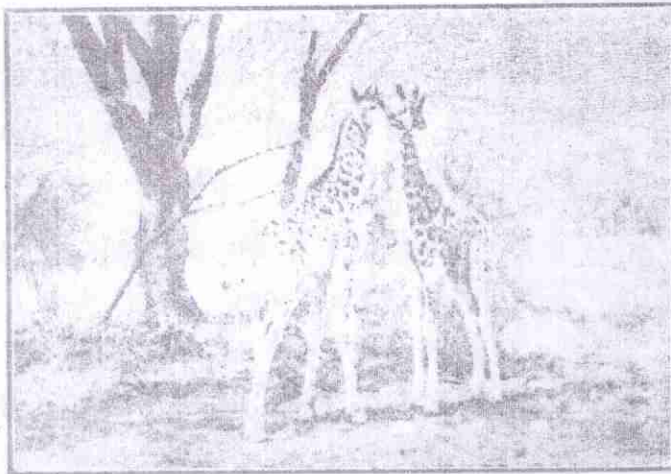
जिराफ़ पत्तियां पसन्द करते हैं पर ज़रा ऊँचाई पर

ऊँट यह चाहता है कि कहीं पानी न बरसे, जहाँ तक नज़र जाय, बालू ही बालू दिखलाई पड़े, मोर यह चाहता है कि रोज़ ही सावन की झड़ी लगी रहे और नदियाँ कल-कल करती बहती रहें। चूहे मनाते रहते हैं कि बिल्लियों का नाश हो जाय, वे कहीं ढूँढ़ने से भी न मिलें और यदि बिल्लियों का नाश न हो तो जैसे चलनी में छेद होते हैं वैसे ही यह संसार बिलों से ढक जाय

[illegible] निगाह जाय बिल ही बिल दिखाई पड़ें। बिल्लियाँ चूहों का नाश [illegible] सकतीं, हाँ इतना ज़रूर चाहेंगी कि सब चूहों के दाँत टूट जायँ, जिससे [illegible] न खोद सकें।

[illegible] तरह तुम समझ सकते हो कि यदि एक भी जानवर की चाह पूरी [illegible] तो इसका यह मतलब है कि वह संसार को अपने सिवाय और किसी
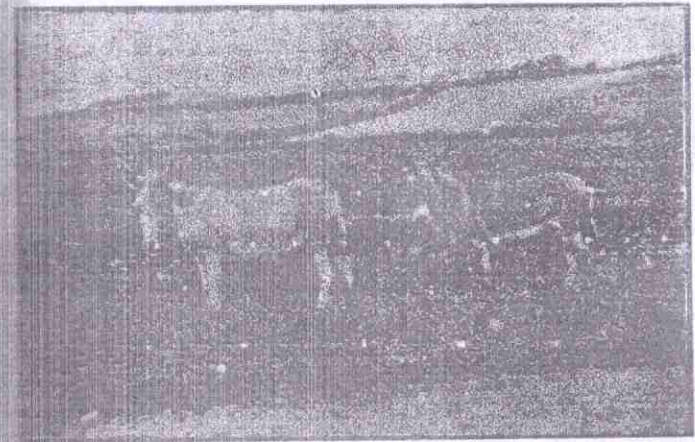
गधों की चले तो वे सारे संसार को रेगिस्तान बना दें

[illegible] न रहने देगा। इसलिए यह कहना ठीक होगा कि भगवान ने [illegible] समझ कर इस संसार की रचना की होगी। कम से कम इतनी बात [illegible] में ज़रूर है कि भगवान ने सबके लिए भोजन बना दिया है और [illegible] दे रक्खी है। परन्तु बिना काम के भोजन नहीं मिलता और [illegible] डाले स्वतंत्रता नहीं मिलती। आदमी ने इस बात को खूब [illegible] लिया है। भोजन के लिए वह खूब काम करता है और [illegible] अपने प्राणों की परवा नहीं करता। इसीलिए आदमी सब [illegible] समझा जाता है और वह डरपोक जानवरों को अपने वश में [illegible] लेता है।

श्रीप्रभातकुमार बी० ए०

कानी आँख के फ़ायदे

(काने राजा की ज़बानी)

(१)

धाँधूपुर में सभा जुड़ी थी पहुँचा वहाँ एक काना,
उसे देख खिलखिला उठे औ, लगे मारने सब ताना।
होकर के भौंचका उसने अपना एक नेत्र खोला,
मार ठहाका हँसा ज़ोर से, फिर वह इस प्रकार बोला।"

(२)

लाभ बड़े काना बनने में अगर जान लो तुम सब भी,
निश्चय ही बन जाओ काने फ़ौरन ही, सब अभी अभी।
सबको नहीं समान देखते तुम दो आँखें होने से,
एक नज़र से सबको देखूँ बस मैं काना होने से।

(३)

आँख एक ही मलनी पड़ती जब उठता हूँ प्रातःकाल,
सुरमा काजल आधा बचता, समझे! एक आँख का हाल।
जाऊँ खेल-तमाशे में, तो दूँगा मैं आधी ही फ़ीस,
कह दूँगा—आधी से ही तो देखूँगा मैं खेल नफ़ीस।

(४)

चश्मा एक ख़रीदा मैंने, लगे मुझे आधे ही दाम,
क्योंकि आँख फूटी के शीशे से हमको था ही क्या काम।
सर्दी गर्मी, कूड़ा-करकट या आँधी गर्दा, हैरान—
नहीं कभी भी कर पाती हैं गई आँख का कुछ नुक़सान।

(५)

कहते हैं असगुनी मुझे जो, हैं वे बेवक़ूफ़ केवल,
मैं ज्योतिषी असल में उनका, बतलाता हूँ सच्चा फल।
काने बनकर ख़ुर्दबीन में इसी लिए सब देते ध्यान,
छोटी चीज़ साफ़ दिखलावे और ठीक लेवें पहचान।

(६)

अगर लड़ाई में मैं जाऊँ तो इनाम मैं ही पाऊँ,
आँख दाबते रहें दूसरे मैं बन्दूक चला आऊँ।
[illegible]लने लगा आँख कुछ अपनी सुननेवालों में से एक,
[illegible]ना उसे देख कर बोला—अभी न फोड़ो, ठहरो नेक।

(७)

[illegible] में फ़ायदे बहुत हैं, और कहो क्या ही अच्छा—
[illegible] फ़िक्र आधी ही रहती इसकी करने में रक्षा।
[illegible] पहुँचता हूँ सब कहते—"आओ जी, काने राजा",
[illegible] के दो आँखों में कौन कहाता महराजा?

(८)

[illegible]ना, आदर पाना, मतलब सब हल हो जाना,
[illegible] रक्षा पूरी, उस पर राजा कहलाना।
[illegible] ईश्वर का साफ़ रूप से दिखलाना,
[illegible] ये बातें तो बन जाओ बस काना।

विद्याभास्कर शुक्ल

एक मूर्ख अरब

एक मनुष्य अरब के रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था। उसका भोज[illegible] खतम होगया और वह मार्ग भी भूल गया। इस कारण वह बह[illegible] तङ्ग हुआ। पर किसी तरह उसने अपनी यात्रा जारी ही रक्खी। कुछ दूर चल[illegible] के बाद उसने एक अरब को देखा। वह रोटी खा रहा था। अरब बड़े अभ्या[illegible] गतसेवी होते हैं इस कारण उस भूखे ने समझा कि अब काम बन जायगा। पास पहुँच कर उसने सलाम किया और बैठ गया। भूखा बेचारा इस ख़या[illegible] में था कि अरब स्वयं उसे भोजन के लिए पूछेगा। किन्तु अरब खाता ही [illegible] और खाने के निमित्त तनिक भी न कहा।

थोड़ी देर में भूखे ने जान लिया कि यह कोई मूर्ख अरब है। शिष्टाचार[illegible] अनभिज्ञ है। जब तक इसके साथ कोई चाल न चली जावेगी, काम न बनेगा। अतः भूखे ने अरब से कहा, "मैं तुम्हारे घर से आया हूँ और बहुत ढूँढ़ने के [illegible] तुम मुश्किल से मिले हो। अरब ने पूछा कि मेरी स्त्री, पुत्र, ऊँट और कु[illegible] सब कुशल से तो हैं। भूखे ने उत्तर दिया कि सब हाल अच्छा ही है।

ऐसा होने के पश्चात् भूखे ने सोचा कि संभवतः अब यह अरब खाने [illegible] लिए कहेगा। पर अरब ने फिर भी न पूछा। भूखा बड़ा दुखी था। क्या करता। झट उसे एक मज़ेदार बात सूझी और उसने एक अधमुये कुत्ते [illegible] ओर संकेत करके अरब से कहा—'यदि तुम्हारा कुत्ता जीता होता तो उ[illegible] दशा इस कुत्ते से भी ख़राब होती।' अरब ने व्याकुल होकर पूछा—क्या [illegible] कुत्ता मर गया?

भूखे ने कहा—हाँ।

अरब—भला वह कैसे मरा?

भूखा—वह तुम्हारे ऊँट का मांस बहुत खा गया। उसे दस्त लगे। फिर [illegible]।

अरब—हाय! क्या मेरा ऊँट भी मर गया।

भूखा—हाँ, वह भी मर गया है।

अरब—अरे! वह कैसे मरा?

भूखा—उसे कोई चारा पानी देनेवाला न था। इस कारण वह भूखा [illegible]

अरब—मेरी स्त्री कहाँ गई थी जो ऊँट को चारा-पानी न मिल सका।

भूखा—वह तो मर गई है।

अरब—हाय! हाय!! वह कैसे मरी?

भूखा—बड़े दुख की बात है कि तुम्हारा बेटा पहले मरा, स्त्री उसके [illegible] पागल हो गई। फिर पत्थर से उसने अपना सर फोड़ा और [illegible] तुम वहाँ न थे इस कारण उसकी मृत्यु बड़ी शोकजनक हुई। [illegible] हाल बतलाया नहीं जाता।

अरब—हाय! हाय!! क्या सचमुच मेरा बेटा मर गया? अरे वह कैसे [illegible]

भूखा—[illegible] की छत उसके ऊपर गिर पड़ी और वह वहीं ठण्डा होगया।

[illegible] होने के पश्चात् अरब बड़ा विलाप करने लगा। फिर खाना-[illegible] अपने घर को रोता-चिल्लाता चल पड़ा। उस भूखे [illegible] और उसको निश्चय हुआ कि अरब वास्तव में बड़ा मूर्ख [illegible]।

महेशप्रसाद
मौलवी आलिम फ़ाज़िल

कीड़े-मकोड़ों के हथियार

हम लोग बन्दूक़, पिस्तौल, तोप लेकर लड़ते हैं। कीड़े-मकोड़ों के पा[illegible] ऐसी कोई चीज़ नहीं पड़ती। इसीसे हमारा ख़याल होता है कि [illegible] उनमें लड़ाई-भिड़ाई कम होती है। पर बात यह नहीं है। उनकी लड़ाई तो कभ[illegible] ख़तम होना जानती ही नहीं। उन्हें हज़ारों क़िस्म के हथियार मिले हुए हैं [illegible] हमारे हथियारों पर लैसन्स लगता है। उन्हें लैसन्स और क़ानून की भी [illegible]
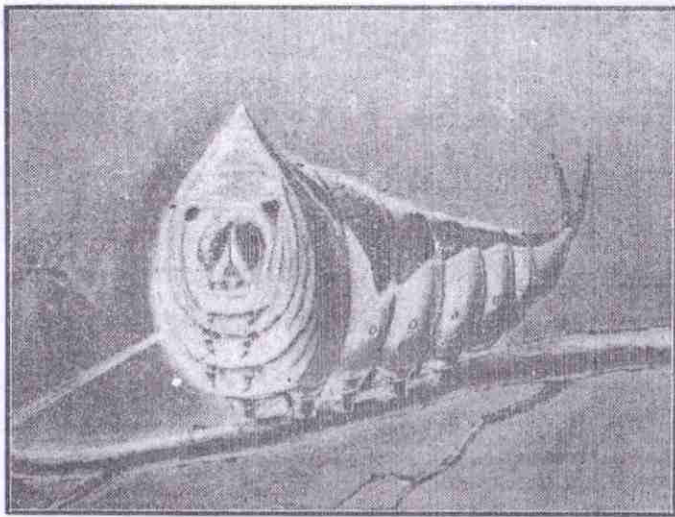
घास का कीड़ा अपने शत्रुओं से लड़ने के लिए तैयार है

परवाह नहीं। हर एक अपना हथियार चौबीस घंटे तैयार रखता है और ज[illegible] ज़रूरत होती, बेखटके उसका वार करता है।

यही नहीं हमारा तो यह भी ख़याल है कि आदमियों ने अपने हथियार[illegible] को इन्हीं के हथियार देखकर बनाया है। मच्छड़ का सूजा देखकर भाले [illegible] बनाना सीखा है। बर्र के डंक से तीर का ध्यान आया। बिच्छू को देखकर [illegible]

[illegible] बनाया गया है, जिससे शिवाजी ने मशहूर मुसलमान को मारा था। [illegible] तक कि आरे, तलवार, गदा, रुखाने सभी इनके पास मौजूद हैं। और तो [illegible] उन्हें जिरह-बख़्तर तक मिला हुआ है। उसे भी यह वक़्त पर काम में [illegible] हैं।

हम लोग न जाने कितने दिनों बाद लड़ाई में अब ज़हरीली गैसें इस्तेमाल [illegible] हैं। पर यह ताज्जुब की बात है कि यह कीड़े-मकोड़े हमेशा से ही [illegible] रस वग़ैरह का प्रयोग जानते हैं। एक मछली उड़ते हुए दुश्मन को
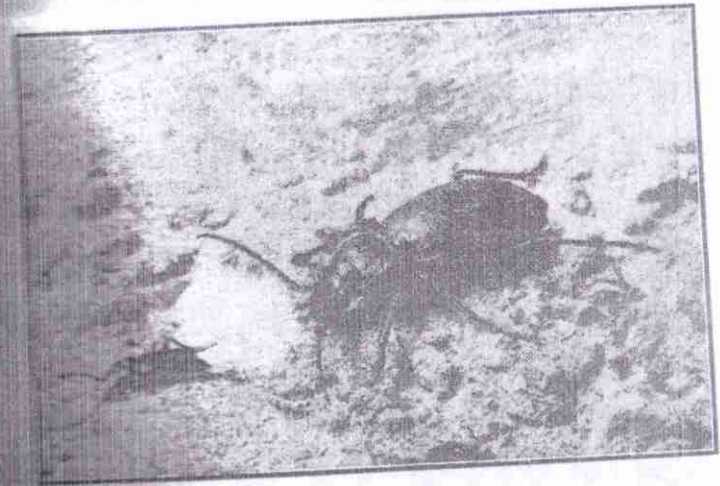
गुबरीला अपनी छोटी-सी तोप चला रहा है

[illegible] का तीर चलाती है। एक प्रकार का गुबरीला अपना [illegible] रखता है। उसके पास एक ज़रा-सी तोप भी होती है। [illegible] की तरह राल-सी फेंकता है। उसमें ऐसी दुर्गन्ध निकलती [illegible] घुटने लगता है। कुछ जल के और थल के कीड़ों पर बड़ी [illegible] है। यहाँ तक कि उसमें कभी कभी ताँबा मिलता है। [illegible] सख़्त चीज़ भी कीड़े के साथ बढ़ती रहती है।

जो कीड़ा घंटे में साठ मील हवा में उड़ता, जो पलक मारते ही पानी की स
से पाताल पहुँच जाता है, यदि उसकी देह पर ऐसा मज़बूत ढकन न हो, तो
या पानी से टकराकर वह मर न जाय। इस खोल पर हवा, पानी, ठण्ड
गर्मी या और किसी का भी असर नहीं पड़ता। जो तेज़ाब बढ़िया से बढ़ि
फ़ौलाद को गला देता है वह भी इन कीड़ों के जिरह-बख़्तर से हार
जाता है।
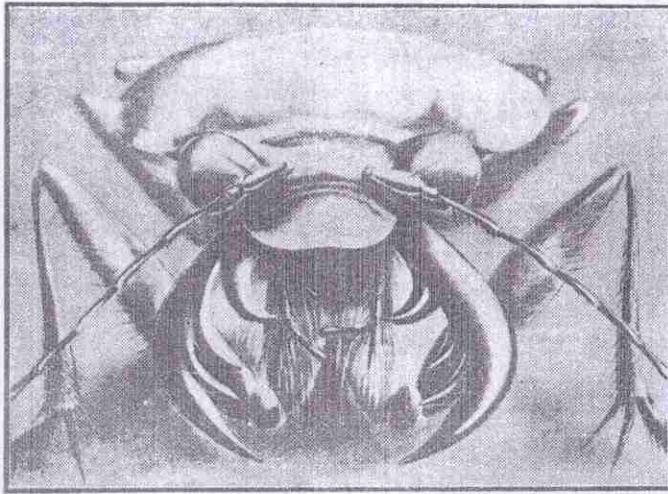
गुबरीला शेर बन कर अपने शत्रुओं को डरा रहा है

शहद की मक्खी और बर्र का डंक उतनी ही सख़्त चीज़ से बना
है, जिससे हमारे लड़ाई के जहाज़ या तोपें। बर्र के जाबड़े भी एक तरह
हथियार हैं। उनसे वह मक्खी आदि को पकड़ लेती है। उनमें वह अपने
बीस गुना तक बोझ उठा कर ले जा सकती है। कुछ कीड़ों के बाल ही ऐसे
हैं, जो हथियार का काम देते हैं। एक क़िस्म का गुबरीला तो ऐसा होता है
उसके मुँह के आगे सींग-से निकले रहते हैं। ये देखने में जैसे भयङ्कर होते
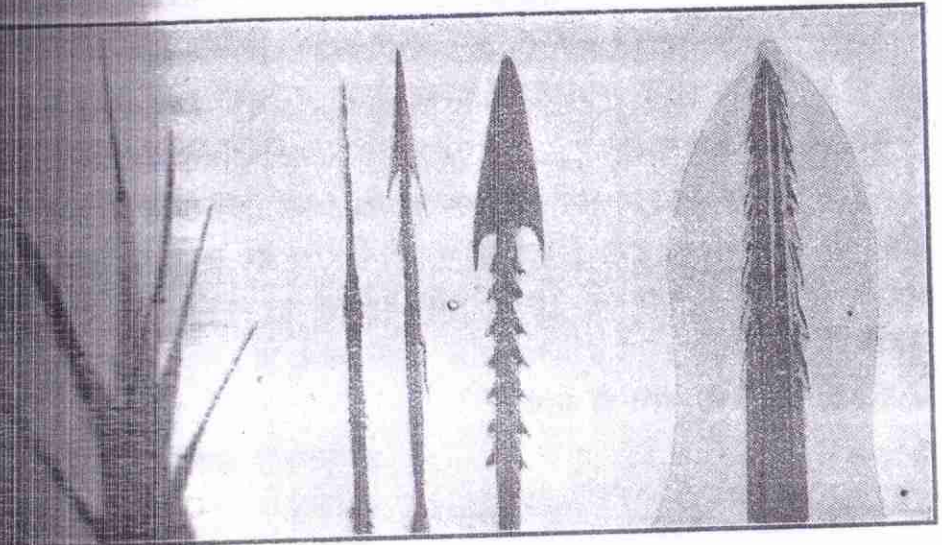
मनुष्यों के बरछी-भाले हैं, अगल बग़ल में कीड़ों के हथियार हैं
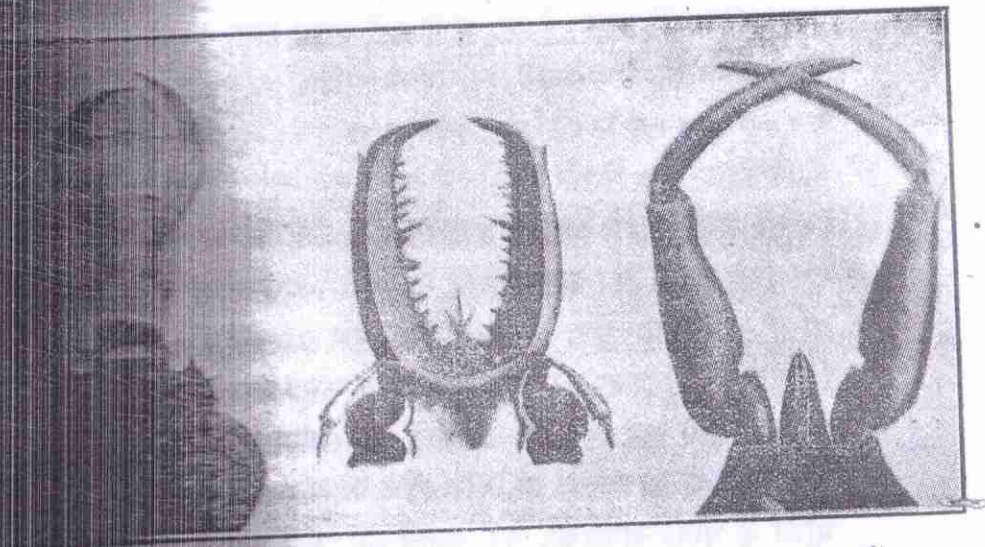
का सिर, २—गुबरीले का जबड़ा, ३—जल-बिच्छू की अगली टांगें

वैसे ही इनसे काम लिया जाता है। ये हमेशा किसी न किसी को मार डाल[illegible] के काम में आते हैं।

इस तरह क़रीब-क़रीब सभी कीड़े-मकोड़ों को ईश्वर की तरफ़ से हथिया[illegible] बाँधने का लैसंस मिला हुआ है। उनसे वे अपनी रक्षा कर सकते हैं, और कभ[illegible] कभी दूसरे कीड़ों को मार कर खुराक़ भी हासिल कर सकते हैं। अगर ह[illegible] लोगों की तरह इनसे इनके हथियार छीन लिये जायँ, तो बहुत जल्दी कीड़[illegible] मकोड़ों की जाति का नाश हो जाय।

शम्भूदयाल सक्सेना, साहित्य[illegible]

वीर बनो

मान सहित यदि रहना है तो, कभी नहीं डरना होगा।
जो कुछ तुमको उचित जँचे वह, लगन सहित करना होगा॥
बस रखना इतना विचार तुम, स्वयं न अनुचित कर बैठो।
अपने से जा छेड़ किसी से भी, न कभी तुम लड़ बैठो॥
पर जो तुमसे लड़ने आवे, मारे बिना नहीं छोड़ो।
दूध पिये हो मा का अपने, कभी न तुम भी मुख मोड़ो॥
मरना या विजयी होना है, रखना सदा इसे तुम याद।
फिर विजयी निश्चय ही होगे, जैसे हुआ कभी प्रह्लाद॥
आँख मिलाये खड़े रहो तो, शेर नहीं खा सकता है।
अगर मर्द की तरह लड़ो तो, पार कौन पा सकता है॥
भारत के भावी नागरिको, ध्रुव समान तुम धीर बनो।
डरना नहीं, न डरवाना तुम, याद इसे रख वीर बनो॥

पद्मकान्त मालवी[illegible]

बच्चों की मनोहर बातें

एक लकड़े ने अपने चचा को लिखा, "पूज्य चचा साहब! मुझे ५० रु० की बड़ी ज़रूरत है। मैं इस पत्र को अपने एक मित्र के हाथ भेज [illegible] है। यदि आप जान सकते कि मुझे ये रुपये माँगते हुए कितनी लज्जा [illegible] है तो आप अवश्य ही मेरे ऊपर दया करते।"

[illegible]—यह पत्र भेजने के [illegible] इतनी लज्जा हुई कि [illegible] मित्र से यह चिट्ठी वापिस [illegible] के लिए दौड़ा किन्तु मैंने [illegible] न पकड़ पाया। ईश्वर करे [illegible] पत्र आपके पास न [illegible]

[illegible] प्यारी।
[illegible] [illegible] [illegible]री॥

क्या बढ़िया [illegible] बतलाऊँ।
दिल में आता है खा जाऊँ॥

चचा साहब ने उत्तर दिया, "चिरंजीव भतीजे ! प्रसन्न रहो। लज्जा करो। ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। तुम्हारी चिट्ठी मेरे पास तक न पहुँच पाई क्योंकि तुम्हारे मित्र से वह खो गई।"

* * * *

ओ री नानी ! ओ री नानी !
कहां गया लोटे का पानी ॥

मास्टर—विपिन ! क... बात है कि तुम दस वर्ष... होकर भी इतने छोटे हो...

विपिन—मास्टर साहब... आप घर पर करने के लि... इतना काम दे देते हैं... मुझे बढ़ने के लिए स... ही नहीं मिलता।

* * *

मास्टर—हाथी ... कहते हैं ?

मोहन—हाथी ... चौकोर चीज़ होती है जिस... आगे भी दुम होती है औ... पीछे भी।

* * *

एक आदमी ने अ... मित्र से पूछा—"क्यों जी आपका लड़का छठे दर्जे में कैसी उन्नति कर रहा है ?

मित्र—"बहुत अच्छी। अब तो घर में बकरियों को बिलकुल नये ढंग से गिनने लगा है।"

आदमी—"अच्छा ! कैसे गिनता है।"

मित्र—"बकरियों की टाँगें गिन लेता है फिर उसमें चार से भाग दे देता है।"

* * * *

मास्टर—सोहन ! अगर बाज़ार का भाव रुपये का चार सेर हो और तुम बनिये को साढ़े तीन रुपये दो तो वह तुम्हें कितना आटा देगा ?

सोहन—चौदह सेर।

मास्टर—यह तो ठीक नहीं है।

सोहन—मास्टर साहब ठीक तो नहीं है लेकिन सब बनिये ऐसा ही करते हैं।

*

प्यार बहुत करते हैं जिसको।
भर लेते हैं मुँह में उसको ॥

मास्टर—क्यों जी कल स्कूल में क्यों नहीं आये ?

लड़का—मास्टर साहब ! दाँत में बड़ा दर्द हो गया था।

मास्टर—बड़ा अफ़सोस है। अब दर्द अच्छा हो गया है क्या ?

लड़का—मुझे मालूम नहीं।

मास्टर—हैं। तुम्हें मालूम नहीं?

लड़का—हाँ मास्टर साहब। डाकृर ने उसे कल ही उखाड़ दिया था। अब पता नहीं कि बिचारे का क्या हाल है।

'एक बड़ा बच्चा'

भारत-गीत

भारतवर्ष हमारा है।
हमको सबसे प्यारा है।
है मस्तक पर सुन्दर हिमगिरि,
हिय पर गंगा की माला।
है विन्ध्या की कटि पर किंकिणि,
पद धोता सागर आला।
जग में सबसे न्यारा है।
भारतवर्ष हमारा है।
चारों ओर बाग उपवन हैं,
खेती की हरियाली है।
लगी फूल फल की ढेरी है,
गाती कोयल काली है।
सुख-सम्पति भण्डारा है।
भारतवर्ष हमारा है।
राम कृष्ण कै-से पुरुषों ने
जन्म यहीं पर धारा है।
दिखला करके काम अनोखे,
अमर नाम विस्तारा है।
प्रभु का बड़ा दुलारा है।
भारतवर्ष हमारा है।

सोहनलाल द्विवेदी

बाघ के साथ कुश्ती

आपने जहाँगीर बादशाह का नाम ज़रूर सुना होगा। हम यहाँ आपको उनके दरबार के एक सरदार की बहादुरी का थोड़ा सा क़िस्सा सुनाते [illegible] इस सरदार का नाम था—अलीकुलीख़ाँ। कहते हैं, कि अलीकुलीख़ाँ अपने [illegible] का एक बहुत बहादुर आदमी था। उसके समान बहादुर सरदार जहाँगीर [illegible] में दूसरा नहीं था। वह ईरान देश का रहनेवाला था, और अपना [illegible] माने के लिए हिन्दुस्तान चला आया था। जहाँगीर के पिता [illegible] अकबर उसकी बहादुरी पर ख़ुश होगये और उन्होंने उसे बङ्गाल में [illegible] बड़ी जागीर दे डाली। अच्छा अब अलीकुली की बहादुरी का करतब [illegible] सुनकर आप दङ्ग रह जायँगे।

[illegible] बार दिल्ली के पास के जङ्गल में एक भयङ्कर बाघ आ पहुँचा। [illegible] पशुओं और मनुष्यों का शिकार करने लगा। आस-पास के गाँवों [illegible] मच गया। यह ख़बर बादशाह जहाँगीर के कान तक पहुँची। आपको [illegible] करने का बड़ा शौक़ था। एक दिन आप ख़ुद जङ्गल के [illegible] का शिकार करने निकले। आपके साथ कितने ही बहादुर सरदार थे, [illegible] भी था।

[illegible] पहुँचते ही हाँका शुरू हुआ। अपने राज्य में आदमियों की [illegible] बाघराज बिगड़ उठे, और उनकी ख़बर लेने के लिए गर्जना [illegible] से बाहर निकल पड़े। उनकी वह गर्जना सुनते ही—उनकी [illegible] हुई आँखें देखते ही बादशाह की सरदार-मण्डली काँप उठी। [illegible] अपने सरदारों से कहा—"है किसी में हिम्मत—जानवरों [illegible] करने की?"

यह सुनते ही तीन सरदार अपने हथियार लिये हुए बादशाह के सामने हाज़िर हुए। परन्तु आज तो बादशाह ने अलीकुली का करतब देखने की ठान ली थी; उन सरदारों से कहा—"हथियार लेकर जानवर पर हमला करने में क्या बहादुरी? ईश्वर ने जानवर को जो अङ्ग दिये हैं, क़रीब-क़रीब वैसे ही आदमी को भी दिये हैं। बहादुरी तो तब है, जब ख़ाली हाथ शेर का शिकार किया जाय।"

यह सुनते ही सरदारों की नानी मर गई। बोले—'हुज़ूर, कहाँ बाघ की ताक़त और कहाँ आदमी का कमज़ोर शरीर! बिना हथियारों के बाघ का शिकार कैसे किया जा सकता है? हमने तो ऐसा कोई माई का लाल नहीं देखा जिसने ख़ाली हाथ बाघ को मारा हो!"

इतना सुनना था कि मारे जोश के अलीक़ुली का ख़ून उबल उठा। वह सरदारों से बोला—"क्या सच ही तुमने कोई ऐसा माई का लाल नहीं देखा,

[illegible] ख़ाली हाथ बाघ को मारा हो? अच्छा, तो आज देखो।" यह कहकर [illegible] अपनी ढाल-तलवार एक तरफ़ फेंक दी और फिर वह लाँग कसकर [illegible] पर हमला करने के लिए बढ़ा।

[illegible] ने घबरा कर उससे कहा—"अरे अलीकुली! यह क्या करते हो! [illegible] मज़ाक कर रहा था, लौट आओ।" पर अलीकुली ने नहीं सुना, वह [illegible] बढ़ता गया। सरदार लोग कहने लगे—"अलीकुली मूर्ख है। इसके [illegible] मौत खेल रही है, मरने दो घमण्डी को।"

[illegible] अलीकुली बाघ की बराबरी पर पहुँचा, उसने बादल के समान गरज [illegible] ललकारा। अलीकुली की वह गुस्ताख़ी देख बाघ मारे ग़ुस्से के [illegible] वह एक भयङ्कर गर्जना कर अलीकुली पर टूट पड़ा। अलीक़ुली [illegible] उसका वार बचा गया। फिर क्या था, दोनों शेर गरज [illegible] लड़ने लगे। बाघ अपने तेज़ पंजों से वार करता था, और अलीकुली [illegible] बचाकर लातों और मुक्कों से उसकी ख़बर लेता था। वह भयङ्कर [illegible] सरदारों के रोंगटे खड़े हो गये, वे आपस में कहने लगे—"आह! [illegible] को क्यों जाने दिया! बेचारा अब दो घड़ी का ही पाहुना है।"

[illegible] पञ्जों के अलीकुली को लोहू-लुहान कर दिया, उसके शरीर में [illegible] घाव हो गये। परन्तु उस बहादुर ने हिम्मत नहीं हारी, वह [illegible] जुटा रहा। कोई एक घण्टे तक वह भीषण लड़ाई होती रही। [illegible] होकर गिर पड़ा, अलीकुली ने दे लात दे मुक्के बाघ का काम [illegible] पर, इतनी देर की लड़ाई के बाद, और बहुत ख़ून बह जाने [illegible] काफ़ी कमज़ोर हो गया था। वह भी थक कर गिर पड़ा।

[illegible] अचरज का ठिकाना न रहा। वे 'वाह-वाह' करने लगे। जहाँगीर [illegible] बहादुरी इसका नाम है।" फिर बादशाह ने उसे पालकी में डलवा

कर घर भिजवा दिया। बहुत दिनों तक वह पलँग पर पड़ा रहा। उसकी पत्नी मेहरुन्निसा ने दिन-रात एक करके उसकी सेवा की, तब कहीं वह अच्छा हुआ।

अच्छा हो जाने पर अलीकुली पालकी में बैठकर बादशाह से मिलने गया। बादशाह बहुत ख़ुश हुए। उन्होंने अलीकुली को बहुत कुछ इनाम दिया और उसे 'शेर-अफ़ग़न' की पदवी देकर उसकी इज़्ज़त बढ़ाई। उसी दिन से अली-कुली इतिहास में 'शेर-अफ़ग़न' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

'शेर-अफ़ग़न' बादशाह से मिलकर लौटा। रास्ते में एक मस्त हाथी अड़ा हुआ था। शेर-अफ़ग़न की पालकी रुक गई। महावत ने जो हाथी को हटाना चाहा, तो वह एक-दम शेर-अफ़ग़न की पालकी पर झपट पड़ा। यह देखते ही वह बहा-दुर बिजली के समान चमक कर पालकी से नीचे कूद पड़ा। उसने ऐसी सफ़ा[illegible] और फ़ुरती से तलवार चलाई कि हाथी की सूँड़ जड़ से कट कर नीचे [illegible] गिरी। शेर-अफ़ग़न ने फिर तलवार का वार किया, तलवार ने हाथी का मस्तक फोड़ दिया, वहीं वह ढेर हो गया। देहली क्या देश भर में शेर-अफ़ग़न की बहादुरी की तारीफ़ होने लगी।

बस, अब समय नहीं है, स्कूल जा रहा हूँ, फिर किसी दिन बहादुरी की और कोई कहानी सुनाऊँगा।

ज़हूरबख़्श
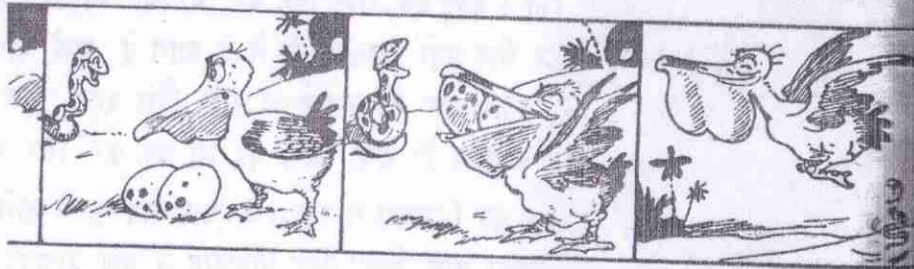
अरे! साँप आगया! — तो अंडों को मुँह में लेकर यहाँ से उड़ चलूँ — अब कोई डर नहीं

रूँ रूँ रूँ रूँ! रूँ रूँ रूँ रूँ!

लाओ ज़रा सारंगी बजाऊँ। जी में आता है कुछ गाऊँ।
अपना करतब सबको दिखाऊँ। बढ़िया-सा एक राग सुनाऊँ॥

लाओ ज़रा सारंगी बजाऊँ
रूँ रूँ रूँ रूँ! रूँ रूँ रूँ रूँ!

छोड़ूँ अब गोदी में चढ़ना, मन में ठानूँ लिखना-पढ़ना।
पढ़े लिखों से आगे बढ़ना, एल० एल० डी० की पदवी पाऊँ॥

लाओ ज़रा सारंगी बजाऊँ
रूँ रूँ रूँ रूँ! रूँ रूँ रूँ रूँ!

[illegible]किट है क्या चीज़ बिचारी, हाकी कहे मैं तुझसे हारी।
[illegible] घोड़े पर करूँ सवारी, घुड़दौड़ों में उसे कुदाऊँ॥

लाओ ज़रा सारंगी बजाऊँ
रूँ रूँ रूँ रूँ! रूँ रूँ रूँ रूँ!

[illegible] ज़ोर मेरे बाज़ू में, शेर भी हो जिससे क़ाबू में।
[illegible] हो मेरे लहू में, मैं राना प्रताप कहाऊँ॥

लाओ ज़रा सारंगी बजाऊँ
रूँ रूँ रूँ रूँ! रूँ रूँ रूँ रूँ!

[illegible] अपने माता पिता का, और अपनी भारत माता का।
[illegible] दुनिया का, दुख-दरदों का नाम मिटाऊँ॥

[illegible] ज़रा सारंगी बजाऊँ
रूँ रूँ रूँ रूँ! रूँ रूँ रूँ रूँ!

श्याममोहनलाल बी० ए० 'जिगर'

बच्चों का कमरा

[यहाँ पर 'बाल-सखा' के छोटे पाठकों की कहानियाँ, कविताएँ और चुटकु[illegible] प्रतिमास छपा करेंगे—सं०]

१—सुबह

सुबह हुई आलस ने घेरा।
हुआ उजाला मिटा अँधेरा ॥
प्यारे लड़को उठो सबेरे।
जिससे रहे न आलस घेरे ॥
फिर ईश्वर में ध्यान लगाओ।
हाथ जोड़ कर शीश नवाओ ॥
इसके पीछे टाँग बिछौने।
जाओ शीघ्र हाथ-मुँह धोने ॥
धो अपना मुह ख़ूब नहा लो।
स्वच्छ वस्त्र से देह सजा लो ॥
मात-पिता के ढिंग फिर जाओ।
कर प्रणाम प्रिय वचन सुनाओ ॥

लाजपतराय, लाहौर

२—मुँह में जाड़ा क्यों नहीं लगता ?

[illegible] में जब हमारी अँगुलियाँ और पाँव आदि ठंढ से अकड़ने लगते हैं [illegible] मुँह खोल कर सड़क पर चलते हैं और मुँह में बिलकुल जाड़ा नहीं [illegible] भाई पूछ सकता है कि इसका कारण क्या है? सवाल तो [illegible] है पर इसके जवाब में सिर्फ़ एक शब्द कहना काफ़ी होगा। वह शब्द [illegible]। हमको लड़कपन ही से मुँह खोल कर चलने की आदत पड़ी [illegible] इसीलिए मुँह में जाड़ा नहीं लगता। देहात में बहुत से लोग होते हैं जो [illegible] नङ्गे पाँव फिरते हैं और उनके पैर में जाड़ा नहीं लगता। बात यह है [illegible] को जाड़ा सहने की आदत पड़ जाती है। महात्मा गाँधी सिर्फ़ [illegible] ठंढी से ठंढी रात में बड़े आराम से सोते हैं। यह इसलिए [illegible] रहने की उन्होंने आदत डाल ली है। जो काम करने की हम [illegible] हैं वह हमें बड़ा सहज मालूम पड़ता है।

बद्रीनाथ, दिल्ली

३—निश्चय

पं-डित होकर पाऊँ नाम।
वि-न विद्या कुछ सरे न काम ॥
पि-ता वचन नहीं टालूँ कभी।
न-हीं झूठ बोलूँगा कभी ॥
चं-चल मन को शान्त करूँगा।
द-ग में कभी न नीर भरूँगा ॥

४—चाह

पढ़ लिख कर होऊँ विद्वान।
हृदय धरूँ भारत का ध्यान ॥

मात-पिता का कहना मानूँ।
परोपकार हित तन मन वारूँ॥
प्रभुवर दिल में ऐसी चाह।
दूर करूँ दुखियों की आह॥

विपिनचन्द्र पन्त

५—मैं कौन हूँ ?

प्रिय भ्रातृगण,

क्या आप सोच सकते हैं कि, आपके सुख-दुःख में भागी होनेवाला; आपके ललित मनोहर कार्यों में हाथ बटानेवाला; जब आप उदासीन हों तब आपको प्रसन्न करनेवाला; आपका मनोरञ्जन करनेवाला; आपको विज्ञान, इतिहास, पुराण, भूगोल इत्यादि अच्छे अच्छे विषयों से परिचित कर उनमें आपका अनुराग बढ़ानेवाला; आपके नेत्रों को सुन्दर सुन्दर, मनोमोहक, चित्ताकर्षक चित्र दिखलानेवाला; जब आपका मन पाठशाला की पुस्तकों से उचट गया हो उस समय आपको बहलानेवाला; आपको मनोरञ्जक पहेलियाँ पूछ कर इनाम देनेवाला; आपके कर्णकुहर में कवितामृत की झड़ी लगा देनेवाला; आपकी इच्छाओं को सदैव यथाशक्ति पूर्ण करने की अभिलाषा रखनेवाला; छोटे छोटे चुटकुले और मज़ेदार बातें बता कर आपको हँसते हँसते लोट-पोट करा देनेवाला, बहुत क्या, आपका सदैव हितचिन्तन करनेवाला —आपका नित्य सखा मैं कौन हूँ ?

विष्णु भास्कर, गोरवे
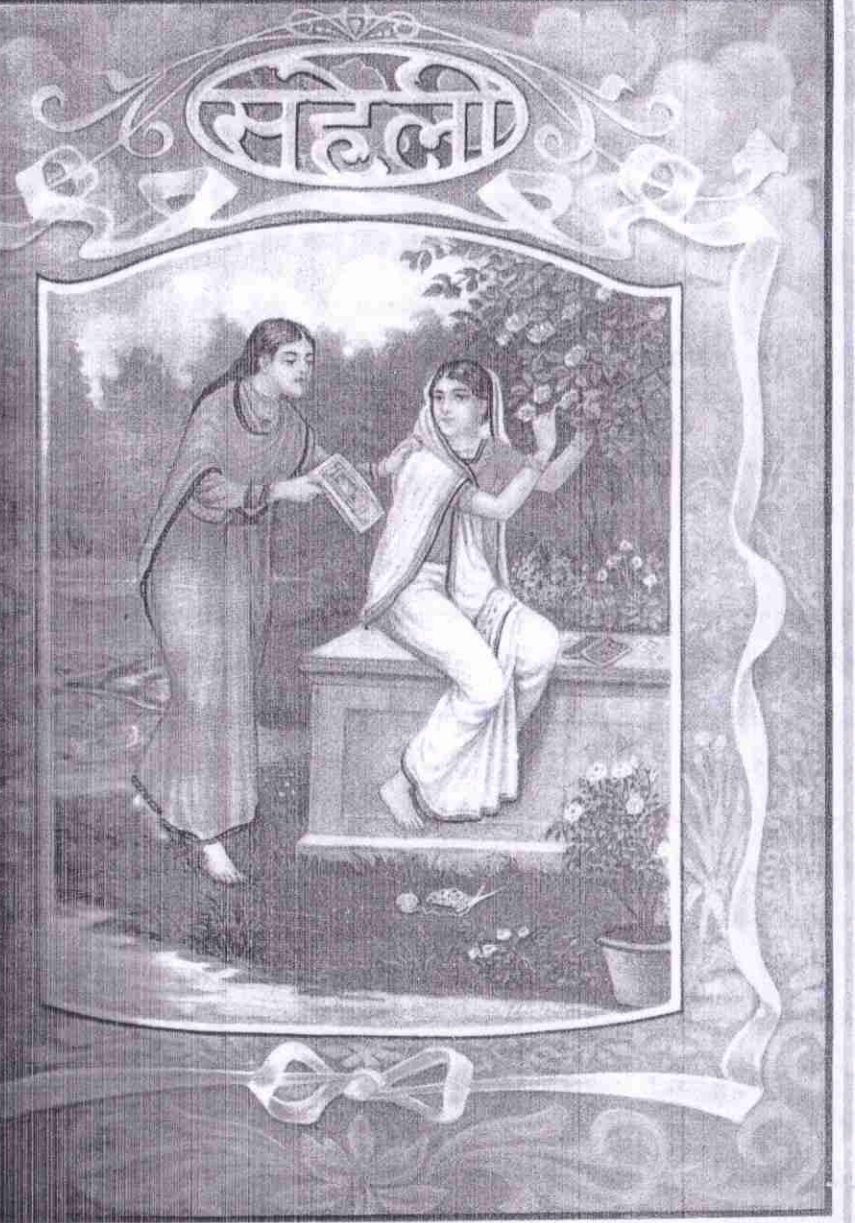
१—मौज

(१)

अच्छा होता यदि मैं होती उड़नेवाली तितली ।
उड़ उड़ फूलों का रस लेती होती मैं भी चितली ॥
पर माता कहती है तितली, कभी कभी फँस जाती है ।
पड़ कर जाले में अपने वह, जल्दी प्राण गँवाती है ।

(२)

अच्छा होता यदि मैं होती चुहिया घर की भूरी ।
सारी रात घूम कर खाती करती इच्छा पूरी ॥
पर माता कहती है वह तो, जल्दी ही फँस जाती है ।
चुहियादानी में बन्दी हो अपने प्राण गँवाती है ॥

(३)

अच्छा होता यदि मैं होती, चिड़िया रंग-बिरंगी ।
घने पेड़ पर तब मैं रचती, थलकुर* अपना जंगी ॥

---

* घोंसला ।

पर मा कहती मेरी बेटी, याद इसे तुम रखना ।
बिल्ली चिड़िया है खा जाती, नोच नाच कर पखना ॥

(४)

अच्छा होता यदि मैं होती, शीलवान कन्या ऐसी ।
चित्त लगाकर मैं सब करती, आज्ञा होती जैसी ॥
पर मा कहती मेरी बेटी, करो प्रयत्न लगा कर ध्यान ।
तेरा घर में सबसे बढ़कर, होगा ख़ासा तेरा मान ॥

देवीदत्त शुक्ल

२—ज़रा सी सुई हज़ार मन की शाबासी

बाल-सखा के सम्पादकजी ने सूची-शिल्प पर मुझसे एक लेख माँ
है। आज मैं वह लेख लिखने बैठी तो मुझे एक घटना का खया
हो आया। इसलिए यहाँ उसी घटना का ज़िक्र करूँगी। लेख फिर क
लिखूँगी।

आठ दस दिन की बात है। मैं अपनी एक सहेली के यहाँ गई हुई थी
मेरी सहेली के एक लड़की है। उम्र क़रीब ग्यारह वर्ष की होगी। वह लड़
अपनी जेब में सुई और तागा हमेशा रखती है। जब मैं अपनी सहेली के घर
वापस आने लगी तो चौकी की एक कील से उलझ कर मेरी चादर का
कोना फट गया। सब लोग "अरे! अरे!" करने लगे पर उस लड़की
तुरन्त जेब से सुई निकाली और उसने मेरी चादर का कोना उसी दम
दिया। मैंने ख़ुश होकर कहा—"शाबास बेटी।" उस लड़की का एक छो
भाई भी है। उसकी शाबासी न हो और बहन की शाबासी हो तो उसे बु
लगता है। उसने कहा—"उँह, सुई तो है ज़रा सी पर शाबासी मिली हज

[illegible] बालक की यह बात सुनकर हम लोग हँस पड़े। मेरी सहेली ने
[illegible]—"यह लड़की बड़ी होशियार है। इसके मारे घर में कोई फटा कपड़ा
[illegible] पाता। यह घर के सब कपड़ों को रोज़ एक बार देख लेती है जिसे
[illegible] है फ़ौरन सी देती है। किसी को कभी कहने की ज़रूरत नहीं
[illegible] इसी लिए इसकी सब तारीफ़ करते हैं।"

[illegible] चाहती हूँ कि बाल-सखा पढ़नेवाली सब लड़कियाँ मेरी सहेली की
[illegible] की तरह अपने पास हमेशा सुई तागा रक्खा करें। अपने भाई के,
[illegible] के, और अपने कपड़े फटे देखें तो फ़ौरन सी लें, कुर्तों की बटन
[illegible] तो उसे फिर लगा दें। ऐसा करने से उनकी भी लोग तारीफ़
[illegible] ज़रा सी सुई के बल पर इतनी बड़ी शाबासी लेना कौन लड़की
[illegible]।

जयदेवी

३—केश बाँधने के कुछ अजीब तरीक़े

[illegible] में ऐसी कोई स्त्री न मिलेगी जिसे अपने बालों की हिफ़ाज़त
[illegible] न हो। बालों की हिफ़ाज़त स्त्रियाँ इसलिए नहीं करतीं
[illegible] को सर्दी गर्मी से बचाते हैं बल्कि इसलिए करती हैं कि वे एक
[illegible] गहने का काम देते हैं। और गहने स्त्रियों को बहुत पसन्द हैं।
[illegible] बेचारे बालों की आफ़त है। कभी उनमें कंघी की जाती है,
[illegible] लगाया जाता है और कभी उन्हें इतना कस कर बाँधा जाता है
[illegible] में दर्द होने लगता है। बालों का शौक़ स्त्रियों को हमेशा रहा है।
[illegible] स्त्रियों को भी और मूर्ख स्त्रियों को भी।

यों तो संसार में जितनी स्त्रियाँ हैं उतने ही बाल बाँधने के तरीक़े भी है [illegible]

सिर पर दो पंखे लगे हैं

पर कुछ तरीक़े ऐसे हैं जिन्हें सुन कर तुम्हें बिना आश्चर्य्य हुए न रहेगा। जूलू

एक सियायो स्त्री का केशकलाप

जाति की स्त्रियाँ अपने बाल [illegible] तरह बाँधती हैं कि दूर से देखने [illegible] जान पड़ता है मानों उनके सिर [illegible] सींग निकली हो। पहले वे [illegible] को कुछ बढ़ाती हैं। फिर उन्हें [illegible] तरह गूँथती हैं कि जान पड़ता [illegible]

स्त्री का सिर है या भैंस का ?

सिर पर कोई टोकरी रक्खी हो। ऊपर से गोंद और एक प्रकार की लाल [illegible]

[illegible] देती हैं। धीरे धीरे सब बाल एक साथ मिलकर सींग की तरह बढ़ने [illegible] हैं। ज्यों ज्यों बाल बढ़ते हैं त्यों त्यों वे मिट्टी पोतती जाती हैं। चार पाँच [illegible] जान पड़ता है मानों उनके सिर में एक लम्बी लौकी निकल आई हो।

एक जूलू स्त्री

श्याम के पीछे के पहाड़ी देशों में मियायो नाम की एक जाति बसती है। इस जाति की स्त्रियाँ हरे बाँस की महीन कमानियों से दो गोल टोपियाँ बनाती हैं। उन्हें सिर में ऊपर नीचे रखती हैं और उन्हीं में बालों को गूँथ देती हैं। ऊपर से वे मुर्ग़े के पंख खोंस लेती हैं। फिर वे बड़ी बड़ी मालायें गूँथती हैं और सिर के दोनों तरफ़ उसे लटकाती हैं।
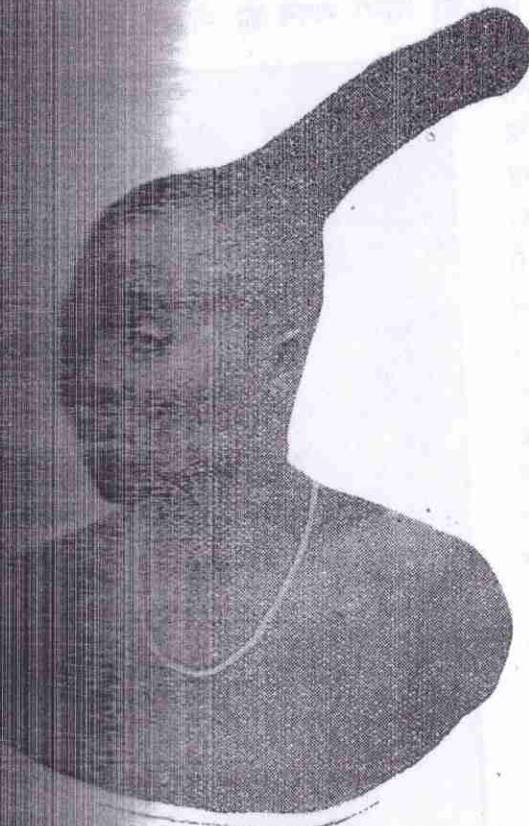
नारवे में बहुत दिनों से यह प्रथा चली आती है कि स्त्रियाँ सिर पर एक भारी [illegible] हैं। यह मुकुट सोने या चाँदी का होता है और बालों से बँधा रहता [illegible] बड़ी तकलीफ़ होती है पर स्त्रियों का शौक़ तो देखो कि इस शृङ्गार के [illegible] तकलीफ़ की बिलकुल परवा नहीं करतीं। ऐसा मुकुट पहननेवाली

स्त्री बड़ी सौभाग्यवती समझी जाती है। अब ये मुकुट बिलकुल शौकीनी के लिए पहने जाते हैं और बड़े सुन्दर गहनों में इनकी गिनती है।

मङ्गोलियों में बड़े घरों की स्त्रियाँ अपने केश अजीब ही ढङ्ग से बाँधती हैं पहले-पहल तुम उनका सिर देखो तो यही कहोगी कि यह औरत का सिर है कि किसी भैंसे का। बिलकुल दो सीगें सी दोनों तरफ़ निकली रहती हैं। बीच में और किनारों पर सोने आदि के तार बँधे रहते हैं। तुम्हें यह जानकर और भी आश्चर्य्य होगा कि ये स्त्रियाँ आँखों में नहीं बल्कि आँखों के नीचे काजल लगाती हैं। अपने अपने देश की रीति तो है।

नारवे की स्त्री

स्वीजरलैंड की स्त्रियाँ जब अपने बाल सवाँर कर घर से निकलती हैं तो जान पड़ता है मानों सिर पर दो पंखे लगे हैं। आगे वे फूल या मोती आदि लटका लेती हैं। पर अब स्त्रियाँ समझने लगी हैं कि जो बाल सादगी से बाँधे जाते हैं वे ज़्यादा अच्छे लगते हैं और उनसे सिर को लाभ भी पहुँचता है।

———
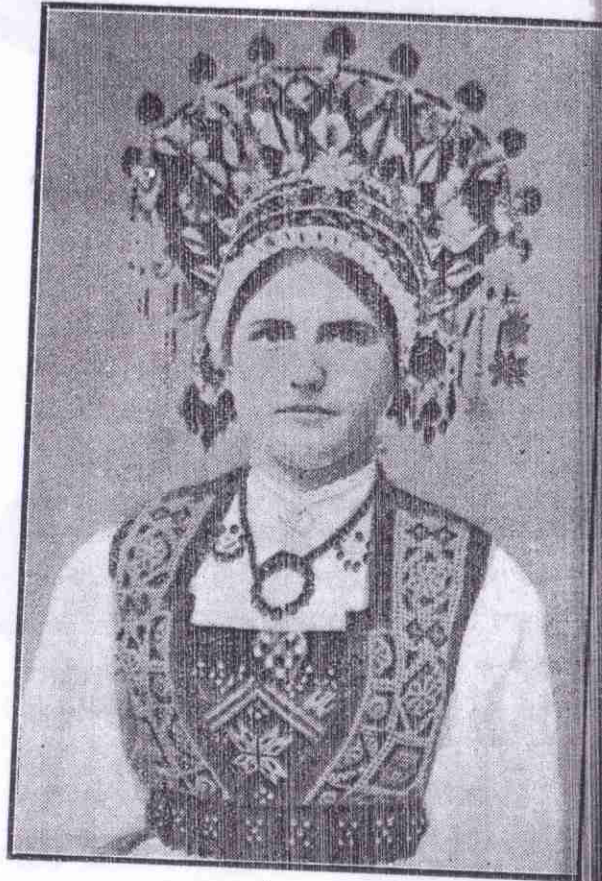
लक्ष्मीकान्त वर्मा

४—चूल्हे में आग कैसे जलानी चाहिए?

बहुत सी लड़कियाँ यह नहीं जानतीं कि चूल्हे में आग कैसे जलानी चाहिए? [illegible] जलाना पहला काम है। तुमसे आग जलाते नहीं बनेगा तो तुम [illegible] ही होशियार क्यों न हो अच्छा खाना नहीं पका सकती हो। मेरे घर में दो [illegible]याँ हैं विद्या और कला। विद्या बड़ी बहिन है। वह फ़ौरन आग जला [illegible] है। कला अभी छोटी है। खाना पकाने में वह घर भर में सबसे होशियार [illegible] जब उसे खाना पकाने को कहा जाता है तो कहती है—"कोई आग जला दे [illegible] रसोई में जा सकती हूँ नहीं तो नहीं।" एक रोज़ मैंने कहा——"कला, तुम्हीं [illegible] जलाओ। आख़िर तुमको यह भी तो सीखना चाहिए।" बड़ी मुश्किल से [illegible] आग जलाने चली। चूल्हे में उसने एक अख़बार रख दिया उसमें दिया-[illegible] लगा दी और ऊपर से लकड़ियाँ रख दीं। अख़बार तो जल कर राख [illegible] पर लकड़ियों में आग नहीं लगी। अब कला ने पंखा झलना शुरू कर [illegible]। नतीजा यह हुआ कि जले अख़बार के टुकड़े सारे रसोई घर में फैल गये। [illegible] पानी में पड़े, कुछ खुले आटे में। अब कला को गुस्सा भी आ गया। उसने [illegible]कर कहा—"चूल्हे में मूड़ छोड़ दूँगी। मर जाऊँगी। बाप रे बाप चूल्हा है कि [illegible]।" इसी समय विद्या आ गई। उसने कहा——"कला चूल्हे से लड़ोगी तो [illegible] भी मुँह लटका लेगा।" मुझे बड़ी हँसी आई। सब लड़कियों को मैं यही [illegible] दूँगी कि बेटियो! आग न जले तो गुस्सा बिलकुल मत करो, धीरज रक्खो, [illegible] दोगी तो सारा काम बिगड़ जायगा और लोग तुम्हारी हँसी करेंगे। [illegible] में कोयला रक्खो। फिर एक पतली लकड़ी लो। उस पर ज़रा सा कपड़ा [illegible] और उसे मिट्टी के तेल में डुबो कर कोयलों पर रख दो। इसके पश्चात् [illegible]ई जलाकर उसमें छुआ दो। ऊपर से पहले पतली फिर मोटी लकड़ियाँ [illegible]। जब लत्ता जल चुके तो धीरे धीरे पंखा झलो। याद रक्खो तेज़ी से पंखा [illegible] तो चारों तरफ़ राख उड़ेगी, तुम थक जाओगी और आग जलेगी नहीं [illegible] से। कला को मैं इसी प्रकार आग जलाना सिखा रही हूँ। आशा है [illegible]एँ इस लेख को पढ़ेंगी वे भी इसी प्रकार आग जलाया करेंगी।

रमादेवी, कान्यकुब्ज

———

५—भारत के रहनेवालो

क्यों सोते हो टाँग पसार, भारत के रहनेवालो ।
नींद तुम्हारी ऐसी भारी,
सूखी विद्या की फुलवारी ।
मूरख हो गई सब सन्तान,
वेद पुराण पढ़ानेवालो ॥ १ ॥

क्यों सोते हो टाँग पसार भारत के रहनेवालो ॥
आलस ने जब तुमको घेरा,
विपदों ने आ किया बसेरा ।
सुख अरु शान्ति सब 'होगई' भङ्ग,
आपस ही में लड़नेवालो ॥ २ ॥

क्यों सोते हो टाँग पसार भारत के रहनेवालो ।
लाखों भाई तरसें दानें,
तुम खाओ व्यञ्ज-व्यञ्ज के खाने ।
ऐसा खाना हरि नहिं भावे,
पाप-अधर्म के करनेवालो ॥ ३ ॥

क्यों सोते हो टाँग पसार भारत के रहनेवालो ।

वङ्किमचन्द्र पन्त 'सुकुमार'

[illegible] प्यारे दोस्तो,
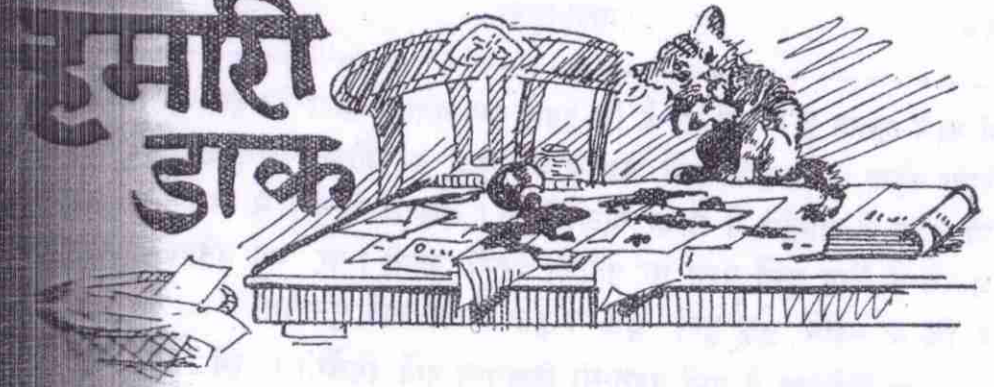
[illegible]२८ का साल बड़े मज़े में बीता । उस साल 'बाल-सखा' की मित्र-[illegible] बहुत बढ़ी । इसके लिए हम अपने समस्त पुराने दोस्तों को बधाई [illegible] । इस अवसर पर हमें यह लिखते हुए हर्ष होता है कि १९२९ का [illegible] और भी म. में बीतेगा । इस साल हमारी मित्र-मण्डली में बहुत से [illegible] आगये हैं । हमारे ये नये दोस्त भी वैसे ही होशियार, मेहनती और [illegible] जान पड़ते हैं जैसे हमारे पुराने दोस्त हैं । यह हम सबके लिए [illegible] अच्छा है । होशियार, मेहनती और उत्साही साथी पाकर किसे खुशी [illegible] ।

[illegible]रे एक सखा ने यह प्रतिज्ञा की है कि वे पहली जनवरी सन् १९२९ [illegible] अपने स्कूल के लड़कों के साथ प्रेम का बर्ताव करेंगे और हर अच्छे काम [illegible] सहायता करेंगे । यह प्रतिज्ञा बड़ी अच्छी है । आशा है हमारे सब साथी [illegible] प्रतिज्ञायें करेंगे ।

[illegible]रे सामने एक चिट्ठी खुली रक्खी है । हमारे एक दूसरे सखा उसमें [illegible] हैं—"मैं कोई कहानी पढ़ना शुरू करता हूँ तो सबसे पहले मेरे दिल [illegible] बात उठती है कि यह ख़तम कैसे हुई ? बस मैं शुरू छोड़ कर आख़ीर

में पढ़ने लगता हूँ ।" हमें डर है कि हमारे इस अनोखे सखा को इस बार निराश होना पड़ेगा । क्योंकि इसी अंक में हम 'बुद्धू का जीवन-चरित' छाप रहे हैं। जो साल के आख़ीर में जाकर ख़तम होगा । आख़ीर में बुद्धू ने क्या कहा यह जानने के लिए तुम्हें साल भर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । पर यह संतोष की बात है कि हर महीने बुद्धू तुम्हें कुछ न कुछ अजीब बातें सुनायेगा ।

इस विशेषाङ्क में तुम्हें बहुत-सी दिलचस्प बातें मिलेंगी । हमें बड़ी प्रसन्नता होगी यदि तुम हमें लिखोगे कि तुम्हें सबसे अच्छा क्या लगा ? हमें तो आरम्भ का रङ्गीन चित्र बहुत पसन्द आया । यह दक्षिणी ध्रुव का प्राकृतिक दृश्य है । पहले-पहल कैपटन स्काट नामक एक अँगरेज़ ने इस ध्रुव की यात्रा की थी । कैपटन साहब और उनके साथी वहीं बर्फ़ में गल कर मर गये । पर जब तक उनके शरीर में जान रही तब तक अपनी डायरी में अपनी यात्रा का हाल लिखते रहे ताकि उनके बाद जो यात्रा करें उन्हें उससे मदद मिले और जो यात्रा न करें वे पढ़कर वहाँ का हाल जान सकें ! इस साहस की कौन तारीफ़ न करेगा ।

पारसाल हमारे दोस्तों ने हमें बड़ी दिलचस्प चिट्ठियाँ लिखी थीं, बहुत सी चिट्ठियों को हमने छापा भी था । जब से 'बच्चों का कमरा' खुला है तब से हमारे नन्हे दोस्त लोग लेख, चुटकुले और कविताएँ भी ख़ूब लिख रहे हैं । आगे चल कर हम इनमें से बहुत-सी चिट्ठियाँ और लेख आदि छापेंगे पर भेजनेवालों को हम अभी से धन्यवाद दे रहे हैं ।

तुम्हारा दोस्त
सम्पादक

दिसम्बर सन् १९२८ के प्रश्नों के उत्तर

१—(१) गुलाब (२) बेला (३) चमेली (४) चम्पा (५) कमल (६) गेंदा (७) हरसिंहार (८) सूर्यमुखी (९) कनैल ।

२—बाल-सखा है नाम हमारा ।
खेल कूद है काम हमारा ॥
देखा है मैंने जग सारा ।
मैं हूँ लड़कों को अति प्यारा ॥

३—(क) गड्ढा (ख) धुँवा

निम्नलिखित ५० बालक-बालिकाओं को एक एक पुस्तक इनाम में दी गई—

१—नन्दजी, सिरिसिया । २—हेमलता कमठान, मैनपुरी । ३—अजयबहादुरसिंह, खैरहा । [illegible]—[illegible]पाल, लायलपुर । ५—जतनलाल, इन्दौर । ६—अवधविहारीप्रसाद गुप्त, सँहतवार । [illegible]—[illegible]जे मसीह, सागर । ८—बम्बेश्वरी देवी, रायबरेली । ९—श्रीधर मालवीय, इलाहाबाद । [illegible]—[illegible]विहारी सेठ, लखनऊ । ११—कृष्णचन्द्र, गोंडा । १२—गजेन्द्रसिंह, बनारस । [illegible]—[illegible]द्धानन्द मित्तल, मेरठ । १४—सूरजप्रसाद पाठक, मण्डला । १५—म० ह० नरगुंदकर, [illegible] । १६—किसोरीशरन भटनागर, जबलपुर । १७—चन्दनदेवी, बुलन्दशहर । १८—श्रीकुमारी, [illegible] । १९—प्रतिपालस्वरूप, जलालाबाद । २०—सौभाग्यवती, आगरा । २१—जगदीशचन्द्र [illegible], अलीगढ़ । २२—वासुदेव कृष्ण तामस्कर, बिलासपुर । २३—शातिन्देवी अलवर । [illegible]—[illegible]ल्याणमल टोंग्या, हाटपीपल्या । २५—अभिनन्दनकुमार टडैया, ललितपुर । २६—जगत-[illegible] [illegible]डले । २७—भास्करराव तामस्कर, जबलपुर । २८—जितेन्द्रकुमार जैन, बिजनौर । [illegible]—[illegible]नारायण सिंघानिया, कानपुर । ३०—रामनाथ गोयन्दका, कलकत्ता । ३१—श्याम-[illegible] सान्डल, बाराबङ्की । ३२—माधव वामन खानखोजे, बिलासपुर । ३३—कमलावती [illegible], [illegible] । ३४—पवित्रादेवी, कपूर्थला । ३५—सुशीलकुमारी, देहरादून । ३६—लुईज़ा [illegible], [illegible]पुर । ३७—जगदीशप्रसाद शुक्ल, जबलपुर । ३८—आनन्द वासुदेव ओती, निवास । [illegible]—[illegible], छपरा । ४०—वैदेहीशरण, लहेरियासराय । ४१—जयदेवी जैन, मथुरा । [illegible]—[illegible] शर्मा, बीकानेर । ४३—सोमलतादेवी, देहली । ४४—मुहम्मद इब्राहीमख़ाँ, [illegible] । ४५—सुमतीदेवी, देहरादून । ४६—किशोरीलाल गुप्त, कानपुर । ४७—मोतीलाल [illegible] । ४८—निर्मला जोशी, भरतपुर । ४९—प्रभावती, नाथनगर । ५०—पुष्पावतीदेवी [illegible], [illegible]पुर । (शेष ६४ वें पृष्ठ पर देखो)
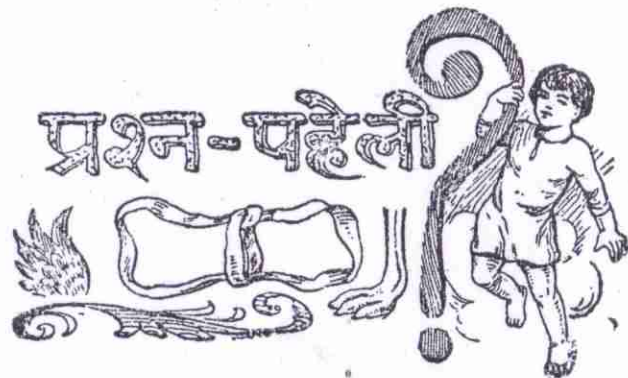
प्रतिमास ५० लड़कों को इनाम दिया जाया करेगा ।

सब लड़के-लड़कियाँ जवाब भेज सकते हैं

(१)

नीचे नौ वृक्षों के नाम लिखे जाते हैं। इन वृक्षों को उनकी लोकप्रियत[ा] के क्रम से लिखो। यानी जिस वृक्ष को ज़्यादा लोग पसन्द करें उसे सब[से] पहले लिखो, फिर उसके बाद जिनको पसन्द करें उन्हें लिखो, इसी तरह सबों [को] नम्बर डालकर लिखो, केवल अपनी पसन्द की बात मत लिखो, यह देखो [कि] दूसरे लड़के-लड़कियाँ किसे अधिक पसन्द करते हैं। इसलिए अच्छा यह हो[गा] कि उत्तर भेजने से पहले अपने बहुत से दोस्तों से पूछ लो कि वे क्या सब[से] अधिक पसन्द करते हैं। जो जितने ही अधिक लड़कों से पूछेगा उसका जवा[ब] उतना ही ठीक हो सकता है।

पीपल	जामुन	कदम
आम	शीशम	गूलर
बरगद	बबूल	नीम

(२)

एक आदमी कहता है कि इस समय मैं ठीक सौ बरस का हूँ और मे[री] प्रत्येक जन्म-गाँठ के अवसर पर उत्सव मनाया गया है। ऐसे उत्सव केवल २[५] बार हुए हैं। कारण ?

घनश्यामदास पोद्दा[र]

(३)

एक टाँग से खड़ा हुआ हूँ।
एक जगह पर अड़ा हुआ हूँ॥
मुँह नीचे, भारी दुम ऊपर।
मैं हूँ कौन बताओ भू पर॥

(४)

गोल बदन है आँखें चार।
शीश झुका लो मुझे निहार॥
लड़के जब पढ़कर घर आते।
पहले मुझसे हाथ मिलाते॥

[नीचे] जो कूपन दिया जाता है उसे लकीर पर से काट लो और जवाब के [साथ] [illegible] भेजो।

[बाल]सखा—प्रश्न-पहेली-प्रतियोगिता जनवरी १९२९

मैं नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर भेज रहा हूँ

१—लोकप्रिय वृक्ष २—प्रश्न ३—पहेली ४—पहेली

(जिसका जवाब न भेजो उसे काट दो)

नाम.................................. आयु..........

पता..

([इनाम] जीतने पर मैं प्रह्लाद, दमयन्ती, अनोखी कहानियाँ, सावित्री, नामक पुस्तक [में से एक] को छोड़ कर बाक़ियों को काट दो।)

[माता], पिता, बड़े भाई, बहिन या मास्टर का हस्ताक्षर..................

(६१ वें पृष्ट से आगे)

नोट—फूलों का क्रम सबके जवाबों से मिलान करके रक्खा गया है। कवितापूर्ति श्रीधर मालवीय, इलाहाबाद ने सबसे अच्छी की थी, ऊपर उन्हीं की लाइन दी गई है।

१२) वाले पारितोषिक का निर्णय

नवम्बर सन् १९२८ ईसवी के बाल-सखा में श्रीयुत सत्यप्रकाश गुप्त मेरठ ने ६ प्रश्न प्रकाशित कराये थे उनके निर्णायक भी वही थे। उन्होंने नीचे लिखे अनुसार पुरस्कार दिये हैं—

श्रीमती हरप्यारीदेवी, मुरादाबाद .... ४)
श्रीयुत दुर्गाप्रसाद, रायबरेली ३)
श्रीयुत राजकिशोर, मेरठ १)

पारितोषिकदाता ने १) इनाम श्रीचन्द्रशेखर पाण्डेय काशी को भी दिया है, पर पता ज्ञा न होने से उनके पास इनाम भेजा नहीं गया। पांडेजी को चाहिए कि पुरस्कार-दाता को अपना पता लिखकर इनाम मँगवा लें। २) अभी गुप्तजी ने अपने पास रख छोड़े हैं, ये रुपये जि मिलेंगे उसका नाम आगामी अङ्क में प्रकाशित किया जायगा। गुप्तजी ने अच्छा उत्तर लिखने लिए कुछ बालक-बालिकाओं की प्रशंसा भी की है। खेद है कि स्थानाभाव के कारण यहाँ ह उनका नाम प्रकाशित नहीं कर सकते।

तीसरे प्रश्न का उत्तर 'आध आना' है (यदि तुम इसमें से आधा निकाल दो तो आना र जाता है जो आधे आने का दूना है।

Pinted and published by K. Mittra, at The Indian Press, Ltd Allahabad.